अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य प्रवर श्री विद्यासागरजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री माननीय रामनाथजी कोविंद एवं अन्य।

वीर निर्वाण संवत् - 2543
अश्विन शुक्ल पक्ष, वि.सं. 2074, सितम्बर 2017
अंक : इक्तालिस
वर्ष : दस

गुरु पूर्णिमा पर जबलपुर में आ.श्री आर्जवसागरजी महाराज के पादप्रक्षाल करते हुए विनोद जैन, अजमेर।

वर्षायोग स्थापना पर जबलपुर में आचार्य महाराज के पादप्रक्षाल करते हुए पुरवा अध्यक्ष कंछेदीलालजी सपुत्र।

पुरवा, जबलपुर में वर्षायोग स्थापना पर दीप प्रज्ज्वलन करते हुए भानुकुमार-इन्दौर, लोकेश जैन-दिल्ली आदि।

पुरवा, वर्षायोग स्थापना की मंगल विधि सम्पन्न करवाते हुए ब्र.जिनेश भैया।

पुरवा में वर्षायोग स्थापना पर आचार्यश्री के कार्यक्रम का मंच संचालन करते हुए डॉ. नरेन्द्र जैन, भोपाल।

पुरवा, जबलपुर में आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का प्रवचन सुनते हुए भक्तगण।

वर्षायोग स्थापना 2017 के कार्यक्रम में भाव विज्ञान पत्रिका के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए इंजी. महेन्द्र जैन।

वर्षायोग मंगल कलश की स्थापना करते हुए देश के कोने-कोने से आये भक्तगण।

रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-दस
अंक - इक्तालिस

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ।

● परामर्शदाता ●
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● सम्पादक ●
डॉ. अजित कुमार जैन,
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
फोन : 0755-4902433, 9425601161
bhav.vigyan@gmail.com

● प्रबंध सम्पादक ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा
कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

● सम्पादक मंडल ●
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), इंदौर (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● कविता संकलन ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● प्रकाशक ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा
सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
फोन : 0755-4902433, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● आजीवन सदस्यता शुल्क ●

पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन (स्थायी)सदस्यता	:	1500

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं
रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. प्रवचन प्रमेय	- आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज	2
2. सत्पथ-दर्पण	- स्व.पं. अजित कुमार शास्त्री	12
3. पारसचन्द से बने आर्जवसागर	- आर्यिकारत्न श्री प्रतिभामति माताजी	22
4. मन को नियंत्रित करने वाला ही सब कुछ पाता है	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	26
5. अहिंसा और विज्ञान	- मुनिश्री नमितसागरजी महाराज	27
6. जैन दर्शन अपने आप में पूर्ण विज्ञान है	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	33
7. अतिशय क्षेत्र मढ़ियाजी	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	34
8. जिनशासन की महिमा	- अशोक जैन, जबलपुर	35
9. पटाखा त्यागो-जीवन शिल्प अभियान	- भारतीय जैन यूनिटी ग्रुप	36
10. समाचार		37
11. प्रश्नोत्तरी		

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः

प्रवचन प्रमेय

गतांक से आगे........

-आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।

देवा वि तस्स पणमंति जस्स सया मणो ॥(वीरभक्ति)

उस धर्म को बारम्बार नमस्कार हो जिस धर्म की शरण को पाकर के संसारी प्राणी पूज्य बन जाता है। आराध्य बन जाता है। अक्षय/अनन्तसुख का भंडार बन जाता है।

अभी आपके सामने दीक्षा की क्रिया-विधि सम्पन्न हुई, यह मात्र आप लोगों को उस अतीत के दृश्य की ओर आकृष्ट करने की एक योजना है, कि किस प्रकार वैभव और सम्पन्नता को प्राप्त करते हुए भी भवन से वन की ओर विहार हुआ। संसार महावन में भटकने वाले भव्य जीवो। थोड़ा सोचो, विचार करो, कि आत्मा का स्वरूप क्या है? अभी तक वैभव से अलंकृत वह शृंगार- हार, जो कुछ भी था, उस सबको उतार दिया। कारण, आज तक जो लाद रखा था उसको जब तक उतारेंगे नहीं, तब तक तरने का कोई सवाल नहीं होता। आप लदने में ही सुख-शान्ति का अनुभव कर रहे हैं और मुमुक्षु उसको उतारने में, सुख का, शान्ति का अनुभव कर रहे हैं, यह भीतरी बात है। देखने के लिए क्रिया ऐसी लगती है कि जैसे आप लोग कमीज उतार देते हैं और पहन लेते हैं लेकिन वहाँ पहनने का कोई सवाल नहीं। अब दिगम्बर दशा आ गई। अभी तक एक प्रकार से वे श्वेताम्बर थे, अब वो दिगम्बर बन गये और आप दिगम्बर के उपासक हैं इसलिए आप दिगम्बर हैं, वस्तुतः आप दिगम्बर नहीं हैं। आप इसलिए सब वस्त्र पहनते हुए भी दिगम्बर माने जाते हैं। इस (नग्न दिगम्बरत्व रूप) मत को जो नहीं मानते वो तो हमेशा वस्त्र में ही डूबे रहते हैं।

आपके मन में एक धारणा बनना चाहिए कि मेरी भी यह दशा इस जीवन में कब हो! वह घड़ी, वह समय, वह अवसर कब प्राप्त हो मुझे। हे भगवान! मेरे जैसे आप भी थे, लेकिन हमारे बीच में से आप निकल चुके। कल तक मैं कहता रहा- भैय्या! आदिकुमार-ऋषभकुमार आपके घर में हैं जो कुछ भी करना हो कर लो, सब कुछ आपके हाथ की बात है, लेकिन ज्यों ही वन की ओर आ जायेंगे, नियम से आप मेरे पास आ जाएंगे, कि महाराज! अब आगे क्या करना है? ये मान नहीं रहे हैं। घर में रहना नहीं चाहते, अब कहाँ जाएंगे पता नहीं। बस अब तो उन्हें पता है और आपको? सुनो! आप लोग तो लापता हो जाएंगे, अब आपका कोई भी पता नहीं रहेगा। इसलिए उस दिगम्बर की शरण में चले जाइये, वहां सबको शरण मिल जायेगी।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।

तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष-रक्ष जिनेश्वरः॥

रक्ष-रक्ष यतीश्वरः॥

हे यते! हे यतियों में भी अग्रनायक! हमारे लिए शरण दो। भगवान् को वैराग्य हुआ, उनके साथ चार हजार और दीक्षित हो जाते हैं। यहाँ पर तो उनके माता-पिताओं को भी वैराग्य हो रहा है। तीर्थंकर अकेले लाड़ले

पुत्र होते हैं। घर में यदि 2 पुत्र हो जाएं तो, या तो छोटे के ऊपर ज्यादा प्रेम होगा या बड़े पर। और आप लोग तो समझते ही है कि जो कमाता है उसके ऊपर ज्यादा प्रेम बरसता है, जो नहीं कमाता उसके ऊपर करेंगे ही नहीं। इनका इतना तेज पुण्य होता है कि लाड़-प्यार जो कुछ भी मिलता है माता-पिताओं का वह एक के लिए ही मिलता है इसीलिए वे विषयों में भूल जाते हैं और बाद में विषय से विरक्ति का संकल्प लेते हैं। यहाँ पर भी माता-पिता बनने का सौभाग्य भी बहुत मायने रखता है। तीर्थंकर के माता-पिता, यह संसारी प्राणी आज तक नहीं बना, बन जाने पर नियम से एक-आध भव से मुक्ति मिलती है। इन लोगों (उपस्थित माता-पिताओं) की भावना हुई है कि इस पुनीत अवसर पर वे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार करें और अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त करें। इस माध्यम से हम भी भगवान् से प्रार्थना करते हैं, जिस प्रकार प्रभु का कल्याण हो गया/ हो रहा है, इनका भी हो।

उधर भगवान् के साथ चार हजार राजा भी दीक्षित हुए लेकिन उन्होंने दीक्षा नहीं दी किसी को। दीक्षा किसलिए नहीं दी? इसलिए नहीं दी कि, वे किसी को आदेश नहीं देंगे। दीक्षा लेने के उपरान्त वे गहरे उतरेंगे, किसी से कुछ नहीं कहेंगे। भीतर-भीतर- आत्मतत्त्व में डुबकी लगाते-लगाते जब एक हजार वर्ष व्यतीत हो जायेंगे, सब कुछ क्रियायें होंगी लेकिन कुछ उपदेश नहीं देंगे। न आशीर्वाद देंगे, न कोई आदेश। मौन रहना ही इन्हें पसन्द होगा। इसके बाद बनेंगे ऋषभनाथ भगवान्। दिखाने के लिए कल ही कैवल्य हो जाएगा, कारण एक हजार साल तक तो आप वैसे भी प्रतीक्षा नहीं कर सकोगे। अत: मतलब ये है, कि इस प्रकार की साधना में उतरेंगे कि वह आत्मा का रूप बन जाएंगे। यही सत्य मार्ग है।

इस समय ज्यादा कहना आपको अच्छा नहीं लग रहा होगा क्योंकि आप आकुलित हैं, भगवान् आपके घर से चले गये हैं। भगवान् नहीं थे वे, कुमार थे, और आपके अण्डर में नहीं रह पाये। ये ध्यान रखना माता-पिताओं का कर्त्तव्य होता है अपनी संतान की रक्षा करें। यदि वह घर में रहना चाहे, तो उसके लिए सब कुछ व्यवस्था करें। घर में नहीं रहता तो यह देख लेना चाहिए कि कहाँ जाना चाहता है। कहीं विदेश तो नहीं जाता। यदि विदेश आदि जाने लगे तो, नहीं, यह हमारी परम्परा नहीं है, यहीं पर रहो, यह काम करो, ऐसा समझाना चाहिए। और यदि आत्मा के कल्याण के लिए वन की ओर जाना चाहता है तो आपके वश की बात नहीं यही हुआ आपके वश की बात नहीं रही और ऋषभकुमार निकल चुके घर से।

धन्य है यह घड़ी, यह अवसर, युग के आदि में यह कार्य हुआ था। और आज हमने उस दृश्य को देखा, जाना। किसके माध्यम से जाना यह सब कुछ? अपने आप जान लिया क्या? अपने आप आ गई क्या यह क्रिया? नहीं! इसके पीछे कितना रहस्य छुपा हुआ है। बड़े-बड़े महान् सन्तों ने इस क्रिया को अपने जीवन में उतारा और किसी ने इस क्रिया को अपनी लेखनी के माध्यम से लिख दिया। यही एक मार्ग है जो मोक्ष तक जाता है और कोई नहीं।

विश्व में, सारे के सारे मार्ग को बताने वाले साहित्य हैं। लेकिन यहाँ पर साहित्य के साथ-साथ साहित्य के अनुरूप आदित्य भी हैं। आज तक हमारी यह परम्परा अक्षुण्य है। यह हम लोगों के महान् पुण्य और सौभाग्य का विषय है। आज भी ऐसा साहित्य मिलता है, जिससे हम अध्यात्म-दशा को प्राप्त कर

सकते हैं। कई बार पूछा जाता है कि कैसे प्राप्त कर सकते हैं हमें भी बता दो? तो यहाँ पर वही क्रियाएं हो रही हैं जिन्हें देखकर मालूम होता है कि ऐसे प्राप्त की जाती है वह अवस्था। इतना ही नहीं, आज कुन्दकुन्दाचार्य की परम्परा के अनुरूप चलने वाले, लिंग को धारण करने वाले भी मिलते हैं। तीन लिंग बताये गये हैं- एक मुनि का, (ऐलक, क्षुल्लक रूप) एक श्रावक का, और एक आर्यिका का या (क्षुल्लिका रूप) श्राविका का। आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी ने दर्शनपाहुड में कहा है कि जैनियों के चौथा लिंग नहीं है- **''चउत्थ पुण लिंगदंसणं णत्थि''**।

आज हमारा कितना सौभाग्य है कि कुन्दकुन्ददेव ने, समन्तभद्र स्वामी ने, पूज्यपादस्वामी आदि अनेक आचार्यों ने इस वेश को धारण किया, कितने बड़े साहस का काम किया। सांसारिक वेश को उतार देना भी बहुत सौभाग्य की बात है। अनेक सन्त हुए और बीच में ऐसा भी काल आया, जिसमें सन्तों के दर्शन दुर्लभ हो गये थे। जैसे मैंने कल कहा था दौलतराम जी, टोडरमल जी, बनारसीदास जी, ये सब तरसते रहे। जिन लिंग को देखना चाहते थे लेकिन केवल शास्त्रों को देखकर के रह जाना पड़ा उन्हें। यहाँ तक भी कहने में आता है कि टोडरमल जी के जमाने में धवला, जयधवला, महाबन्ध का दर्शन तक नहीं हो सका। पढ़ना चाहते थे वे। उन्होंने लिखा है कि मैंने गोम्मटसार को पढ़ा उसकी टीका के माध्यम से, उसमें भी उन्होंने लिखा केशववर्णी की टीका नहीं होती तो हम गोम्मटसार का रहस्य नहीं समझ सकते थे। ऐसे-ऐसे साधकों ने इस जिनवाणी की सेवा करते हुए केवल सेवा ही नहीं किन्तु इस वेश को भी धारण कर अपने को धन्य किया। कल पण्डितजी भी कह रहे थे कि हमने भी अपने जीवन में जिनवाणी की सेवा करने का इतना अवसर प्राप्त किया। किन्तु मैं समझता हूँ कि आज दीक्षा-कल्याण का दिन है, पण्डितजी! **जिनवाणी की सेवा तो जिन लिंग धारण करके ही करना सर्वोत्तम है।** यदि आप जैसे विद्वान् जिन लिंग धारण कर इस तरह सेवा करें तो सही सेवा होगी जिनवाणी की। धर्म की प्रभावना भी होगी।

बात ऐसी है जिनलिंग की महिमा कहाँ तक गायी जाये, जहाँ तक गायें, जितनी गायें उतनी ही आनन्द की लहर भीतर-भीतर आती जाती है। एक उदाहरण देता हूँ-

एक सन्त के पास परिवार सहित एक सेठ जी आते हैं। दर्शन करते हैं। पूजन करते हैं। जो कुछ भी करना है कर लिया। इसके उपरान्त प्रार्थना करते हैं कि हे भगवन्! संसार का स्वरूप बताने की कोई आवश्यकता नहीं है। कारण, हमें समझ में आ गया है, लेकिन अब मुझे मुक्ति का स्वरूप बताओ? लोग मुझसे भी पूछते हैं कि महाराज! आपको वैराग्य कैसे हुआ, मेरी समझ में नहीं आता, चारों ओर चकाचौंध है विषयों की और आपको वैराग्य कैसे? हम जानना चाहते हैं। आपने न घर देखा, न बार, न कोई विवाह हुआ, कुछ समझ में नहीं आता क्या जानकर के आपने घर छोड़ दिया? ''छोड़ने को क्या, क्या छोड़ा? कुछ था ही नहीं मेरे पास''- हमने कहा। समझदारी की बात तो मैं यह मानता हूँ- कहना चाहता हूँ कि जो फंसे हुए हैं, उनके मुख को देखकर के मैं भाग आया। कोई भी दिखता है, हंसता हुआ नहीं दिखता। रोता ही रहता है, अपना रोना ही रोता है। मैं समझता हूँ कि बहुत अच्छी बात है जो हम फंसे नहीं। यहाँ से दूर चलिए इसकी क्या आवश्यकता है? पढ़ने की, लिखने की

कोई आवश्यकता नहीं, अनुभव की कभी कोई आवश्यकता नहीं, जो अनुभव कर रहे हैं वही टेलीविजन (मुखमुद्रा) हम देख रहे हैं, इनको देख लो। इनकी समस्या समझ लो, बस अपने लिए वहीं रास्ता बन गया। तो वह कहता है कि मुक्ति का स्वरूप बताओ। किस प्रकार इनसे छुटकारा पाऊँ? सन्त कहते हैं- कुछ नहीं, सो जाओ। सो जाओ, कल आना ''जैसी आज्ञा''- कहकर चला गया सेठ। घर पर सेठजी ने एक तोता बहुत ही लाड़-प्यार से पाल रखा था। उसने पूछा- आज कहाँ गये थे सेठजी! महाराज जी आये थे उनके पास उपदेश सुनने गया था- सेठ ने कहा। क्या कहा महाराज ने- तोते ने पूछा। सेठ ने कहा- उन्होंने कुछ नहीं कहा सिवा इसके कि ''कल आना''। लेकिन आज क्या करना- तोते ने पूछा। सो जा- सेठ ने कहा। अच्छी बात है। दूसरे दिन सेठ पुनः महाराज के पास पहुँच गया। क्यों, क्या बात है?- महाराज ने पूछा। महाराज आपने तो कहा था- आज सो जा, कल आ जाना, इसलिए आ गया। अरे! मालूम नहीं पड़ा, यही तो प्रवचन था- महाराज ने समझाया। सोने का प्रवचन था? हाँ.. हाँ! **''जो व्यवहार में सोता है वह निश्चय में जागता है। और जो निश्चय में सोता है वह व्यवहार में जागता है।''** अब बात उसे समझ में आ गयी थी। उपदेश के बाद घर गया तो देखा तोता तो बिल्कुल अचेत पड़ा है पिंजरे में। अरे! यह क्या हो गया? महाराज जी ने उपदेश बहुत अच्छा दिया- अच्छा समझाया। मैं इसको भी बता देता, लेकिन यह क्या हो गया? मर गया, यह तो मर गया। हे भगवान् क्या हो गया? इस प्रकार करते हुए पिंजरे का दरवाजा खोलकर के उसको देखता है, बिल्कुल अचेत है, ओऽहो! यूं ही नीचे रख देना है तो वह उड़ जाता है और एक खिड़की के ऊपर जाकर के बैठ जाता है, और कहता है महाराज ने बहुत अच्छा उपदेश सुनाया- बहुत अच्छा सुनाया। कैसे सुनाया? सेठ ने कहा। आपने तो कहा था आज सो जा- तोते ने कहा।

रहस्य को सेठ ने अब समझ लिया। **''एक बार सो जाओ मुक्ति मिल जायेगी।'' लेकिन ''सोना'' कैसे? मखमल के गद्दे बिछाकर के नहीं। एयरकंडीशन में नहीं, बल्कि शरीर तो सो जाए और आत्मा अप्रमत्त रह जाए।** आज का विज्ञान क्या कहता है? आत्मा को सुलाओ ताकि रेस्ट मिल जाए, इस शरीर को। मतलब क्या? यही कि चिन्ताओं से, विचारों से, विकल्पों से छुट्टी दे दो-

मा मुज्झह मा रज्जह मा दुस्सह इट्ठणिट्ठअत्थेसु।
थिरमिच्छह जइ चित्तं विचित्तझाणप्पसिद्धीए॥

आत्मा के ध्यान की प्रसिद्धि के लिए मन की एकाग्रता अनिवार्य है मन को एकाग्र करना चाहते हो तो इष्ट तथा अनिष्ट पदार्थों में राग-द्वेष मत करो। इतना ही पर्याप्त है।

मोक्षमार्ग यह है और संसार मार्ग यह है। कौन सा आपको इष्ट है? आप चुन सकते हैं। जबरदस्ती किसी को नहीं किया जा सकता। जबरदस्ती में मार्ग ही संभव नहीं। खुद स्वयं जो अंगीकार करे, उसी का ये मार्ग और जो अंगीकार करता है उसको हजारों व्यवधान आ जाते हैं। व्यवधान आने पर आचार्य कहते हैं कि वह सारे के सारे व्यवधान शरीर रूपी पहाड़ के ऊपर टूट सकते हैं, लेकिन आत्माराम के ऊपर उसका कोई भी स्पर्श तक नहीं हो सकता है। यही एक मोक्षमार्ग है। इस मोक्षमार्ग की कहाँ तक प्रशंसा करूँ, अपरम्पार है।

''महावीर भगवान् की जय'' (केसली 9-3-86 अभिनिष्क्रमणविधि)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः

प्रवचन प्रमेय

-आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज

मणिमय मनहर निज अनुभव से झग-झग-झग-झग करती है,
तमो रजो अरु सतो गुणों के गण को क्षण में हरती है।
समय-समय पर समयसार-मय चिन्मय निजध्रुव मणिका को,
नमता मम निर्मम मस्तक, तज मृण्मय जड़मय मणिका को॥ 1॥

(निजामृतपान)

दो दिन आपके थे अब तीन दिन हमारे हैं। हमारा यह प्रथम दिन है। आज ज्यों ही वृषभकुमार ने दीक्षा अंगीकार की, त्यों ही परिषह और उपसर्गों का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया। इधर-ऊपर से बूंदाबांदी भी प्रारंभ हो गई। **आप लोग भीतर प्रार्थना कर रहे होंगे कि पानी रुक जाए भगवान्, लेकिन एक प्राणी (दीक्षितसंयमी) कहता है- जो भी परीक्षा लेनी हो, ले लो। उसके लिए ही खड़ा हुआ हूँ। यह जीवन संघर्षमय है, इसे बहुत हर्ष के साथ अपनाया है।**

तप कल्याणक- अभिनिष्क्रमण में घर से निकाला नहीं गया किन्तु निकालने से पूर्व ही निकल गये। जो निकलते नहीं, उनकी फजीती इस प्रकार की होगी कि एक दिन चार व्यक्ति मिलकर कन्धे पर रख चौखट से बाहर निकाल देंगे। इसमें किसी भी प्रकार के संदेह की गुंजाइश नहीं। जो हमारा घर नहीं, उसमें हम छिप कर बैठें और उसमें किसी प्रकार से रहने का प्रयास करें, तो भी उसमें रह पाना संभव नहीं। इसलिए-

विहाय यः सागरवारिवाससं वधुमिवेमां वसुधावधूं सतीम्
मुमुक्षुरिक्ष्वाकु-कुलादिरात्मवान् प्रभुः प्रवव्राज सहिष्णुरच्युतः॥

आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने स्वयंभूस्तोत्र की रचना करते हुए आदिनाथ की स्तुति में कहा-भगवन्! आपने सागर तक फैली धरती को ही नहीं छोड़ा, किन्तु जो प्यारी-प्यारी सुनन्दा-नन्दा थीं, उनको भी छोड़ दिया। जिसके साथ गांठ पड़ी थी। उस गांठ को उन्होंने खोलने का प्रयास किया, जब नहीं खुली तो कैंची जैसा काट दिया। अब कोई मतलब नहीं। जिसके साथ बड़े प्यार से सम्बन्ध हुआ था, उसको तोड़ दिया। आज अब किसी और के साथ सम्बन्ध हो गया। यह क्यों हुआ? अभी तक शान्त-सरोवर था। उसमें किसी ने एक कंकर पटक दिया, कंकर नीचे चला गया। उधर वह तल तक पहुंचा इधर तट तक लहर आ गई। नीचे से कंकर ने संकेत भेजना शुरू कर दिये, बुल-बुले के माध्यम से। यानि भीतर क्रान्ति हो गई। भीतर जलक्रान्ति होती है तब इस प्रकार के बुलबुले निकलते हैं। जब बुलबुला निकलता है तो वह आपको बुला-बुला कर कहता है- **''जीवन बहुत थोड़ा है। प्रतिसमय नष्ट हो रहा है ऐसी स्थिति में आपके भीतर उसके प्रति जो अमरत्व की भावना है, वह अयथार्थ है।''**

राजा राणा छत्रपति, हथियन के असवार।
मरना सबको एक दिन अपनी-अपनी बार॥

जब मरने का, जीवन के अवसान का समय आयेगा, तब हम कुछ भी नहीं कर पायेंगे। मरण-मृत्यु आने से पहले हमें जागृत होना है। छत्र, चंवर और सम्पदा कुछ भी कार्यकारी नहीं होगी। ये तो इन्द्र-धनुष, आकाश की लाली और तृण-बिन्दु की भांति क्षणभंगुर है। बहुत जल्दी मिटने वाले हैं और बहुत जल्दी पैदा भी होते हैं। जो जल्दी पैदा होता है, वही जल्दी मिट भी जाता है। लेकिन अब ऐसी पैदाइश की जाए, जो अनन्तकाल तक रहे। ऐसा उत्पाद हो, जो उत्पात को ही समाप्त कर दे। ऐसा कौन-सा उत्पाद है। वह एक ही उत्पाद है जिसे भीतर जाकर देख सकते हैं, जान सकते हैं। ऊपर बहुत खलबली मच रही हो और यदि भीतर में शान्ति हो तो ऊपर की खलबली भीतर की शान्ति में कोई बाधक के रूप में कार्यकारी नहीं। अन्दर की शान्ति बारह भावनाओं का फल है। यह समझ वह (मुनि ऋषभनाथ) ध्यान से बैठ गए।

सोलहकारण भावनाओं के द्वारा जगत् का कल्याण करने का एक संकल्प हुआ, एक बहुत बड़ी इच्छा-शक्ति, जो संसार की ओर नहीं, किन्तु कल्याण की ओर खींच रही थी, उत्पन्न हुई। उस दौरान भावना भायी और फल यह निकला कि तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध हुआ। कब हो गया? उन्हें ज्ञात नहीं। किस रूप में है? ज्ञान नहीं। फिर भी समय पर काम करने वाला है। अभी भी सत्ता में है, लेकिन सत्ता में होकर भी, जिस प्रकार वह कंकर बुलबुले के द्वारा संकेत भेज देता है उसी प्रकार उसने दिया, कि अब घर-बार छोड़ दीजिए। वन की ओर रवाना हो जाइये। इन्द्र जो कि अभी तक चरणों में रहा, कहता है कि आप ने नन्दा-सुनन्दा को छोड़ा। राज्यपाट छोड़ा और सब कुछ छोड़ दो। लेकिन, कम से कम मुझे तो मत छोड़ो। मैंने आपको स्वर्गिक भोजन, वस्त्रादिक चीजें दी हैं। अत: जब तक रहो तब तक मुझे सेवा का अवसर प्रदान करते रहना चाहिए। तब जबाब मिलता है- मैं अकेला हूँ! मैं अब कुमार के रूप में, राजा के रूप में अथवा किसी अन्य रूप में भी नहीं हूँ। मुझे अब वन जाना है, अकेले ही जाना है। साथ में लेकर जाने वाला अब नहीं, यदि आप स्वयं आ जाए तो कोई आवश्यकता अथवा विरोध भी नहीं। मतलब यह हुआ, कि अभी तक अनेक व्यक्तियों के बीच में बैठा और अब अकेला होने का भाव क्यों हुआ? हाँ! इसी को कहते मुमुक्षुपना-

लक्ष्मीविभवसर्वस्वं, मुमुक्षोश्चक्रलांछनम्।
साम्राज्यं सार्वभौमं ते, जरत्तृणमिवाभवत्॥

मुमुक्षुपन की किरण जब फूट जाती है हृदय में, तब बुभुक्षुपन की सारी की सारी ज्वाला शान्त हो जाती है। अन्धकार छिन्न-भिन्न हो जाता है। सूर्य के आने से पूर्व ही प्रभात बेला आ जाती है। इसी को कहते हैं मुमुक्षुपन, तब लक्ष्मी, विभव, साम्राज्य, सार्वभौमपना ये जितने भी हैं सब ''जरत्तृणवत्''-जीर्ण-शीर्ण एक तृण के समान देखने में आते हैं।

आपको यदि रास्ते पर पीली गिट्टी देखने में आ जाती है तो आपको यही नजर आता है कि पीली है तो सोना होना चाहिए? अब भीतर ही भीतर लहर आ जाती है कि झुककर देखने में क्या बात है? झुक लो! भले ही कमर में दर्द हो। झुककर जब हाथ में लेता है तो लगता है कि कुछ ऐसी ही है, सोना नहीं है, तो पटक देता है और यदि सोना हुआ तो उस गिट्टी के मिलने से ऐसा समझता है कि आज मेरा अहोभाग्य है! भगवान् का दर्शन किया था इसलिए ऐसा हुआ। लेकिन यहाँ भगवान् ने तो आत्मसर्वस्व प्राप्ति के लिए सब कुछ छोड़ दिया,

जीर्ण-शीर्ण तृण समझकर। उसे छोड़ दिया, उसकी तरफ से मुख को मोड़ लिया। प्रत्युपन्नमति इसी को कहते हैं। आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने प्रवचनसार में कहा है-

एवं पणमिय सिद्धे जिणवरवसहे पुणो पुणो समणे।
पडिवज्जदु सामण्णं, जदि इच्छदि दुक्खपरिमोक्खं॥

यदि तुम दु:ख से मुक्ति चाहते हो तो श्रामण्य को अंगीकार करो। श्रामण्य के बिना कोई मतलब सिद्ध नहीं होने वाला, दु:ख से मुक्ति तीन काल में भी संभव नहीं। इसके द्वारा तो मुक्ति का लाभ मिलता है भुक्ति का नहीं। भुक्ति तो अनन्तकाल से मिलती आ रही है। सुबह खा लिया तो शाम को फिर भूख आ गई, अन्थौ (सन्ध्या भोजन) कर ली तो सुबह के नाश्ते की चिन्ता, कब नींद खुले और कब नाश्ता करें? **अरे! नास्ता में आस्था रखने वालो! थोड़ा विचारो-सोचो तो कि मुक्ति का कौन-सा रास्ता है। मुक्ति की बात तो तब चलती है जबकि भुक्ति की कोई भी वस्तु नहीं रहती है।**

जब श्रमण बनने चले जाते हैं श्रमण परिषद् के पास, तब कहते हैं मुझे दु:ख से मुक्ति दिलाकर अनुग्रहीत करो स्वामिन्! मैं महाभटका हुआ, अनाथ-सा व्यक्ति हूँ। अब आपके बिना कोई रास्ता नहीं है, कोई जगह नहीं है। उन्होंने कहा- तुम दु:ख से मुक्ति चाहते हो तो तुम्हें श्रमण बनना होगा। श्रमणता क्या है स्वामिन्! अब बताते हैं कि श्रमणता क्या है और श्रमण बनने के पूर्व किस-किसको पूंछता है? प्रवचनसार में इसका बहुत अच्छा वर्णन दिया गया है। वह श्रमणार्थी सर्वप्रथम माँ के पास जाकर कहता है- माँ! तू मेरी सही मां नहीं है। मेरी मां तो शुद्ध चैतन्य आत्मा है। अब उसी के द्वारा पालन-पोषण होगा। आप तो इस जड़मय शरीर की माँ हो, फिर भी मैं व्यवहार से आपको कहने आया हूँ कि यदि आपके अन्दर बैठी हुई चेतन आत्मा जाग जाए तो बहुत अच्छा होगा। फिर तो आप भी माँ बन जायेंगी। नहीं तो, मैं जा ही रहा हूँ। अब नकली माँ के पास रहना अच्छा नहीं लगता। अब आप रोयें या धोयें, कुछ भी करें, पर मैं चल रहा हूँ। अब पिता के पास चला जाता है और कहता- पिताजी! आपने बहुत बड़ा उपकार किया, लेकिन एक बात है, वह सभी जड़मय शरीर का किया। किन्तु आज मुझे ज्ञान उत्पन्न हुआ कि मेरा पिता तो शुद्ध चैतन्य-आत्मत्त्व है अन्य कोई नहीं। उसी के द्वारा ही मेरी रक्षा होती आ रही है इसलिए मेरा चेतन आत्मा ही पिता है और चेतना माँ। इतना कह उन्हें भी छोड़कर चल देता है। इसके बाद सबको कहता-कहता, बीच में ही जिसके साथ सम्बन्ध हो गया था, उसके पास जाकर कहता है- प्रिये! आज तक मुझे यही ज्ञात था कि तुम ही मेरी प्रिया हो, लेकिन नहीं, अब मुझे ज्ञात हो गया कि चेतना ही मेरी एक मात्र सही प्रिया है, पत्नी है। वह ऐसी पत्नी नहीं है जो बीच से ही छोड़कर चली जाये। वह तो मेरे साथ सदा रहने वाली है। वही तो शुद्ध चेतना मेरी पत्नी है। बस एक के द्वारा ही सारे सम्बन्ध हैं। वही पिता है, वही माँ। वही पति है, वही पत्नी। वही बहिन भी है और भाई भी। जो कुछ है उसी एकमात्र से मेरा नाता है। इसके अलावा किसी से नहीं।

इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि सबसे पूछना आवश्यक है। घबराओ नहीं आप लोगों के जितने भी सम्बन्धी हैं वे कभी भी आपको आज्ञा नहीं दे सकते। हाँ! आपको ही इस प्रकार का कार्यक्रम बनाना होगा, ऐसी उपेक्षा दृष्टि रखना होगी, भीतर ही भीतर देखना आरम्भ करना होगा कि सभी अपने-अपने काम में जुट जाएँ

और आप उपेक्षा कर चल दें।

भगवान् को आपने कभी देखा है, क्या कर रहे हैं? कौन आता है, कौन जाता है यह देख रहे हैं? नहीं। लाखों, करोड़ों ही नहीं जितनी भी जनता आ जाये और सारी की सारी जनता उनको देखने का प्रयास करती है किन्तु वह जनता को कभी नहीं देखते। उनकी दृष्टि नासा पर है, उसमें किसी प्रकार का अन्तर आने वाला नहीं। ''नासा दृष्टि'' का मतलब क्या? न आशा, नासा। किसी भी प्रकार की आशा नहीं रही, इसी का नाम नासा है। यदि उनकी दृष्टि अन्यत्र चली गई तो समझिये नियम से आशा है। वह आशा, हमेशा निराशा में ही घुलती गई है, यह अतीतकाल का इतिहास है।

न भूत की स्मृति अनागत की अपेक्षा,
भोगोपभोग मिलने पर भी उपेक्षा।
ज्ञानी जिन्हें विषय तो विष दीखते हैं,
वैराग्य-पाठ उनसे हम सीखते हैं॥

वे ज्ञानी हैं। वे ध्यानी हैं। वे महान् तपस्वी हैं। वे स्वरूप-निष्ठ आत्माएं हैं, जिन्हें भूत-भविष्यत के भोगों की इच्छा-स्मृति नहीं है। मैंने खाया था इसकी कोई स्मृति नहीं है। बहुत अच्छी बात सुनी थी, एक बार और सुना दो तो अच्छा है। ''वन्स मोर'' वाली बात अब नहीं रही। अनागत की कोई इच्छा नहीं। जब अनागत की कोई इच्छा नहीं और अतीत की स्मृति नहीं तो वर्तमान में भोगों की फजीती हो जाती है। वह उन्हें लात मार देता है। इसी को कहते हैं समयसार में हेय-बुद्धि। किसके प्रति हेय-बुद्धि? भोगोपभोग के प्रति। भोगोपभोग को लात मारना, खेल नहीं है। जहाँ भोगोपभोग सामग्री हमें लात मार देती है, फिर भी हम उसके पीछे चले जाते हैं। लेकिन ज्ञानी की यह दशा, यह परिभाषा अद्वितीय है।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव, जिनके दर्शनमात्र से वैराग्यभाव सामने आ जाता है। जिनके स्वरूप को देखते ही अपना रूप देखने में आ जाता है।

सो धर्म मुनिन करि धरिये, तिनकी करतूति उचरिये।
ताको सुनिये भवि प्राणी, अपनी अनुभूति पिछानी॥

वह मुद्रा, जिसके दर्शन करने से हमारा स्वरूप सामने आ जाए। आत्मा का क्या भाव है? यह ज्ञात हो जावे। अनन्तकाल व्यतीत हो गया, आज तक स्वरूप का ज्ञान क्यों नहीं हुआ? वैराग्य को वैराग्य से ही देखा जाता है। **''विरागी की दृष्टि रागी को देखकर भी, राग में विरागता का अनुभव करती है और रागी की दृष्टि विरागता को देख, विरागता से भी राग का अनुभव करती है।'' यह किसका दोष है? यह किसका फल है? इसको कोई क्या कर सकता है? जिसके पेट में जो है वही तो डकार में आयेगा।**

दो टैंक थे तैरने के। एक में दूध था और एक में मट्ठा- मही था। उन टैंकों में दो व्यक्ति तैर रहे थे। दोनों को डकारें आईं। ज्यों ही डकार आई, एक ने कहा- वाह-वाह, बहुत अच्छा-बहुत अच्छा, क्या सुवास और सुरस है? भगवन्! अम्लपित्त जैसी डकार आ रही है, दूसरे ने कहा। अरे क्या बात हो गई। तुम तो दूध के टैंक में हो और अम्लपित्त की बात कह रहे हो? बात ही समझ में नहीं आती। दूसरा कहता है- तुम तो मट्ठे के टैंक में

हो और फिर भी वाह-वाह कह रहे हो? ऐसी कौन-सी बात है? बात ऐसी है कि आपके टैंक में दूध है परन्तु पेट रूपी टैंक में महेरी खा रखी है, इसीलिए उसी की डकारें आ रही हैं। और हम यद्यपि मट्ठे के टैंक में हैं लेकिन मैंने क्या खा रखा है मालूम है? जिसमें बादाम-पिस्ता और मिश्री मिलाई गई है, ऐसी खीर उड़ाकर आया हूँ तब डकार कौन-सी, किस प्रकार की आयेगी।

बात ऐसी ही है कि समयसार की चर्चा करते-करते भी अभी डकार खट्टी आ रही है। इसका मतलब यही है, भीतर कुछ और ही खाया है। मैं तो यही सोचता हूँ कि इसको (समयसार) तो पी लेना चाहिए। जिससे भीतर जाने के उपरान्त जब कभी भी डकार आयेगी तो उसकी गन्ध से, जहाँ तक पहुँचेगी जिस तक पहुँचेगी वह संतुष्ट हो जायेगा। इसका स्पर्श मिलते ही सन्तुष्ट हो जाएगा। उसकी मुख-मुद्रा देखने से भी सन्तुष्टि होगी। लोग पूछते फिरेंगे कि क्या-क्या खा रखा है, कुछ तो बता दो?

सफेद मात्र देखकर सन्तुष्ट मत होइये, परीक्षा भी करो कम से कम। कारण दोनों सफेद द्रव्य हैं, मट्ठा भी और दूध भी। लेकिन दोनों के गुण धर्म अलग-अलग हैं। स्वाद लीजिए, उसे चखने की आवश्यकता है? **आज लखने की आवश्यकता है, लिखने की नहीं? ''लिखनहारा बहुत पाओगे, लखनहारा तो विरला ही मिलेगा''। लखनहारा जो भीतर उतरता है। लिखनहारा तो बाहर ही बाहर घूमता है,** शब्दों को चुनने में लगा रहता है। बाहर आने पर भीतर का नाता टूट जाता है। जो भीतर की ओर दृष्टि रखता है वह धन्य है।

आज वृषभकुमार को वैराग्य हुआ। उनकी दृष्टि, जो कि पर की ओर थी, अपनी ओर आ गई। अपनी ओर क्या, अपने में ही स्थिर होने को है। अपने में स्थिर होने के लिए बाहरी पदार्थों का सम्बन्ध तोड़ना आवश्यक होता है। जब तक बाहरी द्रव्यों के साथ सम्बन्ध रहेगा, वह भी मोह सम्बन्धी तो दु:ख और परेशानी ही पैदा करेगा। किन्तु स्वस्थ होने पर दु:ख और परेशानी का बिल्कुल अभाव हो जाएगा। स्वस्थ होने के लिए बाहरी चकाचौंध से दूर होना अनिवार्य है। इसीलिए समयसार में यह गाथा अद्वितीय ही लिखी गई है-

उप्पण्णोदयभोगे विओगबुद्धीए तस्स सो णिच्चं।
कंखामणागदस्स य उदयस्स ण कुव्वए णाणी॥

वह ज्ञानी उदय में आई हुई भोगोपभोग सामग्री को लात मार देता है, हेय बुद्धि से देखता है। लात मारने से अपने पैरों में तकलीफ न हो जाए, इसलिए लात भी नहीं मारता, वह तो मात्र हेयबुद्धि से यूं नाक कर देता है। ऐसे क्यों नाक सकोड़ रहे हो? अच्छी नहीं, पसंद नहीं क्या? पसन्द आ जाती तो नाक फूल जाती। सकोड़ रहे हैं, मतलब पसन्द नहीं, नापसन्द हो गई। उसने देखना भी बन्द कर दिया। उन भोगों की स्मृति तो बहुत दूर की बात, आकांक्षा की बात भी बहुत दूर की होगी, अब तो अनाप-सनाप-सम्पदा जो मिली है उसे कहता है- यह सम्पदा कहाँ, आपदा का मूल है। यह अर्थ अनर्थ का मूल है। **परमार्थ अलग वस्तु है और अर्थ अलग वस्तु। मेरा अर्थ, मेरा पदार्थ मेरे पास है, उसके अलावा मेरा कुछ भी नहीं। तिल-तुषमात्र भी मेरा नहीं है। मैं तो एकाकी यात्री हूँ। कहाँ जाऊँगा? कोई इच्छा भी नहीं। किससे मिलना? किसी से कोई मतलब नहीं। अब मुक्ति की इच्छा भी नहीं। इच्छा मात्र से भी कोई मतलब नहीं। बस, अपने आप में रम जाने के लिए तत्पर हूँ।**

मुमुक्षु को अकेला होना अनिवार्य है। आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने दो स्थानों पर ''मुमुक्षु'' संज्ञा दी। एक- वृषभनाथ के दीक्षा के समय और दूसरी अरनाथ भगवान जब चक्रवर्तित्व पद छोड़कर चले गये तब। उस समय अरनाथ भगवान् को सब कुछ क्षणभंगुर प्रतीत हुआ, दु:ख का मूल कारण प्रतीत हुआ, इसीलिए उन्होंने उसको छोड़ दिया। **ऐसा मुमुक्षु ही ज्ञानी-वैरागी होता है। उसी का दर्शन करना चाहिए। रागी का दर्शन करने से कभी भी सुख-शान्ति का, वैभव-आनन्द का अनुभव देने वाला नहीं।**

वृषभनाथ भगवान् के जमाने की बात। चक्रवर्ती भरत के कुछ पुत्र थे, जो कि निगोद से निकलकर आये थे, (बीच में एक-आध त्रस पर्याय सम्भव है) सभी के सभी बोलते नहीं थे। चक्रवर्ती को बहुत चिन्ता हुई। उन्होंने एक दिन आदिनाथ भगवान् के समवरण में जाकर पूछा-प्रभो! तीर्थकरों की वंशपरम्परा में ऐसे कोई पंगु, लूला, बहरे और अपंग नहीं होते, लेकिन कुछ पुत्र तो ऐसे हैं जो बोलते ही नहीं? हमें तो दिमाग में खराबी नजर आती है। मुझे जब अड़ोसी-पड़ोसी उलाहना देते हैं कि- ''तुम्हारे बच्चे गूंगे और बहरे हैं, तब बहुत पीड़ा होती है। मैं क्या करूँ? भगवान् वृषभनाथ ने कहा- वे गूंगे और बहरे नहीं हैं, बल्कि तुम ही बहरे हो। भगवान् कैसे बहरे हैं हम? बहरे इसलिए कि उनकी भाषा तुम्हें ज्ञात नहीं। देखो तुम्हारे सामने ही वे हमसे बोलेंगे। उन्होंने कहा- सब लोग राजपाट में घुसते चले जा रहे हैं। झगड़ा हो रहा है। कलह हो रहा है। भाई-भाई में लड़ाई हो रही है, इससे इनको वैराग्य हुआ। अत: सब कुछ छोड़कर सभी पुत्रों ने भगवान् के पास चल दिया और कहा- हे प्रभो! जो आपका रूप सो हमारा रूप, जो आपकी जाति हो हमारी जाति, बस हम, आपकी जाति में मिल जाना चाहते हैं। और ॐ नम: सिद्धेभ्य: कह पंचमुष्ठी केशलौंचकर बैठ गये। तब चक्रवर्ती भरत ने कहा- ये गूंगे नहीं थे क्या? नहीं! इन्हें जातिस्मरण हो गया था। इसलिए नहीं बोलते थे।

बन्धुओ! मैं जातिस्मरण की बात इसलिए कह रहा हूँ कि कुछ आपको भी स्मरण आ जाए। जातिस्मरण की बात जिससे नारकियों के लिए सम्यग्दर्शन होता है। उन्हें वहाँ पर वेदना के अतिरेक से भी सम्यग्दर्शन होता है। परन्तु मनुष्यों को जातिस्मरण से जिनबिम्ब के दर्शन से और जिनवाणी सुनने/पढ़ने से ही होता है। मनुष्य को वेदनानुभव से सम्यग्दर्शन नहीं होता वह जाति की ओर देखता है। लेकिन जो भव्य है, सम्यग्दृष्टि है वह उससे दूर रहता है। देखो भरत! तुम्हारे पुत्रों को बोलने की शक्ति होते हुए, मात्र पर्याय को देखकर तुम्हारे साथ बोलना पसन्द नहीं, बोलने की इच्छा नहीं उनको, क्योंकि कामदेव के ऊपर चक्र चलाने वाले हैं, आप भाई के ऊपर चक्र चलाने वाले हैं। सर्वार्थसिद्धि से तो उतरे हुए हो और धार्मिक सीमा का भी उल्लंघन करते हो। दोनों तद्भव मोक्षमागी हो अत: कामदेव एवं चक्रवर्ती दोनों ही अन्त में निर्ग्रन्थ (मुनि पद) अपना कर मोक्ष चले जाओगे। इसीलिए मन्त्रियों ने कहा- तुम दोनों ही लड़ो, हम देख लेते हैं, कौन पास होता है? चक्रवर्ती भरत तीनों में फेल हो गये और चौथे में भी। युद्ध तो तीन ही थे चौथा कौन-सा था? चौथा यह था कि सीमा का उल्लंघन नहीं करना, धर्म युद्ध करना। उन्होंने उसका भी उल्लंघन कर चक्र का प्रयोग कर दिया। छोड़ा नहीं, कसर बाकी नहीं रही।

निरन्तर.....

ॐ नमः सिद्धेभ्यः
शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः।

सत्पथ-दर्पण

गतांक से आगे.....

स्व. पं. अजित कुमार शास्त्री
(पूर्व जैनगजट संपादक)

इक्कीसवीं वार्ता

परिशिष्ट

भा.दि. जैन शास्त्रि परिषद् के प्रस्ताव के अन्तर्गत ''नियति वाद, कार्य-सिद्धि में निमित्त कारण की अकिंचित्करता, व्यवहार चारित्र की त्याज्यता, व्यवहारनय की असत्यार्थता, केवल ज्ञानावरण कर्म के क्षय से केवलज्ञान का उदय न मामना इन कहानपंथ सिद्धान्त के मान्य पाँच विषयों के समर्थन में श्री पं. वंशीधर जी कलकत्ता ने अपने ट्रैक्ट में कुछ नहीं लिखा। इन विषयों का समर्थन यह लिखकर छोड़ दिया है, कि इन विषयों पर प्रस्ताव में कुछ आधार नहीं बताया गया। संभवत: 'अमूल्यदान-क्रयी' न्याय के अनुसार श्री पं. वंशीधर जी ने यह सरल साधन अपनाया है। क्योंकि प्रस्ताव की उल्लिखित ये पाँचों बातें कहानपंथ सिद्धांत में प्रख्यात है। अस्तु।

इन पाँचों बातों पर भी यहाँ संक्षेप से प्रकाश डालना आवश्यक है, जिससे पाठक उनसे भी परिचित हो जावें।

नियतिवाद

श्री कहान भाई ने अपनी 'वस्तु विज्ञानसार' पुस्तक के पृष्ठ 46 पर नियतिवाद का पोषण किया है। बाद में इस नियतिवाद का नाम उन्होंने 'क्रमबद्धपर्याय' रक्खा है। यह नियतिवाद एकान्त का सिद्धान्त जैन-आगम के प्रतिकूल है। श्री कहान भाई ने सर्वज्ञ के ज्ञान की दुहाई देकर जो समस्त पदार्थों की नियत पर्यायों का नियत-क्रम रूप एकान्त बनाया है वह सर्वज्ञ की वाणी से भी गलत है और जीव पुद्गलों की अनिश्चित अक्रमिक पर्यायों से भी गलत सिद्ध होता है। प्रथम ही संक्षेप से शास्त्रीय आधार से इस विषय पर प्रकाश डाला जाता है-

1- गोम्मटसार कर्मकाण्ड गाथा 882 में तथा पंच-संग्रह आदि आर्ष ग्रन्थों में नियतिवाद को एकान्त मिथ्यात्व माना गया है। गोम्मट सार कर्मकाण्ड में लिखा है-

जत्तु जदा जेण जहा जस्स य णियमेण होदि तत्तु तदा।
तेण तहा तस्स हवे इदि वादो णियादिवादो दु॥882॥

अर्थ- जो जिस समय जैसे जिसके नियम से होना है, वह उस समय उससे वैसे उसके होता है, ऐसा नियम से सब वस्तुओं का मानना नियतिवाद एकान्त मिथ्यात्व है।

2- श्री कुन्दकुन्द आचार्य ने पंचास्तिकाय में लिखा है-

जीवो सहावणियदो अणियदगुणपज्ज ओघ परसमओ।
जदि कुणदि सगं समयं पब्भस्सदि कम्मबंधादो॥155॥

अर्थ-जीव अपने ज्ञानदर्शन रूप चैतन्य स्वभाव में नियत है। किन्तु अनादि काल से मोहनीय कर्म के उदय से क्षण-क्षण में क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, भय, स्त्रीवेद, पुंवेद आदि विभिन्न प्रकार मोही भावों के कारण पर समय रूप अनियत गुण पर्याय वाला बना हुआ है। यदि वह मोही भावों से अलग होकर स्व समय बन जाता है तो कर्म बन्धन से छूट जाता है।

इस गाथा में आचार्य ने संसारी पर समय जीव को मोहनीय कर्म के उदय से 'अनियत गुणपर्याय वाला' बना हुआ है। यदि वह मोही भावों से अलग होकर स्वसमय बन जाता है तो कर्म बन्धन से छूट जाता है।

इस गाथा में आचार्य ने संसारी परसमय जीव को मोहनीय कर्म के उदय से 'अनियत गुणपर्याय वाला' कहा है।

3- श्री अमृतचन्द्र सूरि ने प्रवचनसार ग्रन्थ के अन्त में चरणानुयोग सूचक चूलिका में 26 वीं 27वीं नियतिनय तथा अनियति नय द्वारा आत्मा का निरूपण किया है-

नियतियेन नियमितौष्ण्यवन्हिवन्नियतस्वभावभासि ॥26॥
अनियतिनयेन नियत्यनियमितौष्ण्यपानीयवदनियतस्व-भावभासि॥27॥

अर्थ- आत्मा अग्नि की नियमित उष्णता के समान नियतिनय से नियति-स्वभाववाला भासित होता है ॥26॥ जल की अनियत उष्णता के समान आत्मा अनियति नय से अनियत स्वभाव वाला प्रतिभासित होता है ॥27॥

4- तत्त्वार्थराजवार्तिक प्रथम अध्याय सूत्र 3 से 9 वें वार्तिक में लिखा है-

कालानियमाच्च निर्जरायाः।

अर्थ-जीवों के कर्मों की निर्जरा होकर मुक्ति होने का समय नियत नहीं है-

5- श्री कुन्दकुन्द आचार्य ने भावपाहुड़ में लिखा है-

विसवेयणरत्तक्खयभयसत्थग्गहणसंकिलेसाणं।
आहारुस्सासाणं णिरोहणा खिज्जए आऊ॥25॥
हिमजलणसलिलगुरुयरपव्वयतरुरुहणषडणभंगेहिं।
रसविज्जजोयधारण अण्णपसंगेहिं विविहेहिं॥26॥
इय तिरिय मणुयजम्मे सुइरं उदवज्जिऊण बहुवारं।
अवमिच्चुमहादुक्खं तिव्वं पत्तोसि तं मित्तं ॥27॥

अर्थ- विषभक्षण, रक्तक्षय, भय, शस्त्रघात, संक्लेश, आहार-निरोध (भूख), श्वास-निरोध (सांस घुट जाना) हो जाने से आयु असमय में समाप्त हो जाती है। तथा हे मित्र! तूने बर्फ में गलने, अग्नि में जलने, पानी में डूबने, पर्वत से तथा ऊँचे वृक्ष से गिर पड़ने से शरीर भंग हो जाने के कारण, पारे आदि घातक रसायन से एवं समाधि लगाने आदि अन्य कारणों से इस मनुष्य भव में तथा तिर्यञ्च भव में अत्पन्न होकर अनेक बार

अकालमरण का तीव्र दु:ख पाया है।

6- श्री उमास्वामी आचार्य ने तत्त्वार्थसूत्र अध्याय दो में लिखा है-

औपपादिकचरमोत्तमदेहासंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुष: ॥ 53 ॥

अर्थ-देव, नारकी, उत्तम चरम-शरीरी मनुष्य, भोगभूमिज पशु, मनुष्य पूर्ण आयु भोगने वाले होते हैं। इसी से यह भी सिद्ध हो जाता है कि शेष जीवों का अकाल-मरण भी हो सकता है।

सारांश यह है कि कर्म-भूमिज पशु पक्षी कीड़े मकोड़े आदि तथा मनुष्यों का अकालमरण भी होता है।

इस सूत्र की टीका रूप श्लोकवार्तिक, सर्वार्थसिद्धि, आदि ग्रन्थों में अकाल मरण की पुष्टि की गई है।

7- गोम्मटसार कर्मकाण्ड में अकाल मरण (कदलीघात मरण) का विधान है-

विसवेयणरत्तक्खयभयसत्थग्गहणसंकिलेसाणं।
उस्सासाहारणं णिरोहदो छिज्जदे आऊ ॥ 57 ॥

अर्थ- विष खा लेने से, असह्य पीड़ा से, रक्त-क्षय हो जाने से, महान भय से, शास्त्रघात से, भारी संक्लेश से, सांस घुट जाने से, भोजन पानी न मिलने से आयु असमय में समाप्त हो जाती है।

8- गोम्मटसार कर्मकाण्ड में कर्म की 10 दशा बतलाई हैं-

बंधुक्कट्टकरणं संकममो कट्टुदीरणा सत्तं।
उदयुवसामणिधत्ति णिकाचणा होदि पडिपयडी ॥ 437 ॥

अर्थ- बन्ध, उत्कर्षण (स्थिति अनुभाग का बढ़ना), संक्रमण (बाँधी हुई कर्म प्रकृति का बदल जाना), अपकर्षण (बाँधी हुई स्थिति अनुभाग का घट जाना), उदीरणा (समय से पहले कर्म का उदय में आना), सत्व, उदय, उपशान्त, निधत्ति (जिसकी उदीरणा संक्रमण न हो सके), निकाचित (जिस कर्म की उदीरणा, उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण न हो सके) ये कर्म की दश दशाएँ होती हैं।

इनमें से उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण और उदीरणा के अनुसार बाँधा हुआ कर्म जैसे का तैसा फलदायक नहीं रहता, उसकी दशा अनियत रहती है। यानी- कभी कर्म की स्थिति अनुभाग घट जाता है, कभी बढ़ जाता है, कभी साता, असाता आदि कर्म बदल जाते हैं, कभी उनका उदय यथासमय से पहले आ जाता है। अकालमरण भी आयु कर्म की समय से पहले उदीरणा के अनुसार होता है।

9- श्री अकलङ्कदेव ने तत्त्वार्थ राजवार्तिक ग्रन्थ के द्वितीय अध्याय के अन्त में अकालमरण की पुष्टि करते हुए लिखा है-

अप्राप्तकालस्य मरणानुपलब्धेरपवर्ताभाव इति चेत् न, दृष्टत्वादाम्रफलादिवत् ॥ 110 ॥

यथा अवधारितपाककालात् प्राक् सोपायोपक्रमे सत्या - म्रफलादीनां दृष्ट: पाकस्तथा परिच्छिन्नमरणकालात् प्रागुदीरणाप्रत्यय आयुषो भवत्यपवर्त:।

अर्थ-शंका-समय (आयु समाप्ति) से पहले मरण नहीं होता है?

उत्तर- सर्वथा ऐसी बात नहीं है। समय से पहले (आयु समाप्त होने से पहले) भी जीवों का मरण होता देखा जाता है। जैसे कि समय से पहले आम का पकना देखा जाता है। जिस प्रकार आम का फल पेड़ से तोड़कर

समय से पहले पयाल कागज भुस आदि में रखकर पका लिया जाता है, उसी प्रकार आयु की मर्यादा से पहले शस्त्रघात, विष-भक्षण, दुर्घटना आदि कारणों से आयु कर्म की उदीरणा होने (निश्चित समय से पहले उदय में आ जाने) से आयु का अपवर्त (कम होना) होता है। यानी- स्थिति पूर्ण होने से पहले मरण हो जाता है।

आयुर्वेदसामर्थ्याच्च ॥ 11॥ यथाष्टङ्गायुर्वेदविद्भिषक् प्रयोगे अतिनिपुणो यथाकालवाताद्युदयात्प्राक् वमनविरेचनादिना अनुदीर्णमेव श्लेष्मादि निराकरोति, अकालमृत्युव्युदासार्थं रसायनं चोपदिशति, अन्यथा रसायनोपदेशस्य वैयर्थ्यम्। न चादोस्ति। अत आयुर्वेदसामर्थ्यादस्त्यकालमृत्युः।

अर्थ- आयुर्वेद (वैद्यक, डाक्टरी) की सामर्थ्य से भी अकाल-मृत्यु की सिद्धि होती है। जैसे वैद्यक विषय में अत्यन्त चतुर वैद्य यथासमय प्रगट होने वाले शरीर में वात आदि विकार से पहले ही औषधि से वमन (उल्टी) तथा विरेचन (मल) द्वारा कफ को निकाल देता है। तथा अकाल मृत्यु से बचाने के लिए औषधि का प्रयोग करना बतलाता है। यदि किसी मनुष्य, पशु-पक्षी का अकाल मरण न होता हो तो औषधि का प्रयोग करना, शल्य-चिकित्सा (चीर-फाड़ आपरेशन) आदि सब उपाय करना व्यर्थ है। इस कारण आयुर्वेद (वैद्यक, डॉक्टरी) की सामर्थ्य से भी अकाल मृत्यु की सिद्धि होती है। इत्यादि अनेक आगम-प्रमाणों द्वारा अकालमरण, तथा संसारी जीवों और पुद्गलों की विभिन्न कारणों से नियत तथा अनियत पर्यायों का होना सिद्ध होता है।

सर्वज्ञ त्रिलोकवर्ती समस्त पदार्थों की त्रिकालीन पर्यायों को जानता है। अपने-अपने उपादान कारण तथा निमित कारणों से जैसी नियत या नियत (क्रमबद्ध या अक्रमिक) पर्यायें होती हैं उनको वह उसी नियत या अनियत क्रम से जानता है। जैसा वह जानता है वैसा ही उसने संसारी जीवों को अपनी दिव्यवाणी द्वारा बतलाया है।

यदि सर्वज्ञ भगवान सर्व पर्यायों को नियति रूप से जानते तो वे नियतिवाद को मिथ्यात्व न कहते।

अत: उपर्युक्त प्रमाणों से जो अकालमरण आदि अनियत पर्यायों के विधान के विषय में आर्ष ग्रन्थों में लिखा है, वह सर्वज्ञ की वाणी के अनुसार ही लिखा है, अपनी कपोल-कल्पित बात नहीं लिखी। इसलिये कहानपंथ के नेताओं को सर्वज्ञ वीतराग देव (सर्वज्ञ भगवान), जिनवाणी (गोम्मटसार, तत्त्वार्थसूत्र, राजवार्तिक आदि ग्रन्थ) और सद्गुरुओं (श्री कुन्दकुन्द आदि ग्रन्थकार आचार्यों) पर श्रद्धा प्रगट करके एकान्त मिथ्यात्वरूप नियतिवाद सिद्धान्त छोड़ देना चाहिये।

विज्ञान के आविष्कार

आजकल के वैज्ञानिक आविष्कार भी क्रमबद्ध-पर्याय की मान्यता को आलसी निठल्ले व्यक्तियों का नि:सार सिद्धान्त प्रमाणित करते हैं।

टीन, एल्युमिनियम, रेडियम आदि धातुओं की उत्पत्ति, सीमेन्ट, स्टेनलैस स्टील का मिश्रित उत्पादन, प्लास्टिक, सैल्युलाइड का निर्माण, काँच के रेशों से वस्त्र-निर्माण, परमाणु द्वारा बिजली बनाना, विध्वंसक बम बनाना, बिजली, टेलीफोन, बेतार का तार, रेडियो, टेलिविजन, कृत्रिम हृदय, प्लास्टिक की हड्डी आदि अगणित पदार्थ ऐसे बन रहे हैं जिनकी पहले कोई क्रमबद्धपर्याय थी ही नहीं।

रूस परमाणु बम की मार से अपने यहाँ की नदियों के प्रवाह की दिशा बदल देने की तैयारी में है जिससे समस्त यूरोप का शीत वातावरण भारत-सरीखा शीत-उष्ण हो जायेगा। परमाणु बम के विस्फोटों ने जलवर्षा को कितना विकृत कर दिया, यह बात सब के सामने है।

कृत्रिम गर्भाधान

पशुओं की नस्ल सुधारने के लिए आजकल कृत्रिम गर्भाधान की भी पद्धति चल पड़ी है। जिस देश में अधिक दूध देने वाली गायें उत्पन्न होती हैं वहाँ के साँड़ों का वीर्य काँच की ट्यूब (वैज्ञानिक काँच की नली) में लेकर सैकड़ों हजारों मील दूरवर्ती देशों में भेज देते हैं। पिचकारी से उसे गायों के गर्भाशय में पहुँचा दिया जाता है जिससे वह गाय गर्भवती होकर उसी नस्ल का बछड़ा-बछड़ी उत्पन्न करती है।

दिल्ली की पशु प्रदर्शिनी में ऐसी अनेक भारतीय गायों के बछड़ी-बछड़े लाये गये थे जो यहाँ से 5000 मील दूर रहने वाले अमरीका के साँडों के (काँच की नली में लाये गये) वीर्य से उत्पन्न हुए थे।

विदेशों में स्त्रियों पर भी इस तरह के कृत्रिम गर्भाधान के प्रयोग हुए हैं। अमरीका निवासी एक मनुष्य के वीर्य को काँच की नली में भारत में लाया गया, उससे एक भारतीय महिला को गर्भाधान कराया गया।

इस तरह यह कृत्रिम गर्भाधान की अक्रम-पर्याय का वैज्ञानिक प्रयोग है।

अन्धों के नेत्र

अब तक अन्धे स्त्री-पुरुष जन्म भर अन्धे ही बने रहते थे। उनका जीवन उनके लिये तथा उनके परिवार के लिये, समाज और देश के लिये भाररूप पराधीन माना जाता रहा है।

अब वैज्ञानिक ने मृतक स्त्री-पुरुषों की आँखें निकाल कर उनको अन्धे स्त्री-पुरुषों की आँखों में लगाने की प्रक्रिया का आविष्कार किया है। इस तरह अन्धे स्त्री पुरुष अन्य व्यक्तियों की तरह अपनी उन लगाई गई आँखों द्वारा देखने लगते हैं।

इसके लिये मरणोन्मुख व्यक्तियों को प्रेरणा करने की पद्धत्ति चल पड़ी है कि मरने के पश्चात् वे अपनी आँखों का दान अन्धों की आँखें ठीक करने के लिये कर दें।

बधिर (बहरे) स्त्री पुरुषों के कान ठीक कर देने का भी वैज्ञानिक आविष्कार हुआ है।

20 वर्ष पहले एक सैनिक अधिकारी का हाथ कट गया था, गत वर्ष अन्य मृतक मनुष्य का हाथ काट कर उस सैनिक के हाथ में जोड़ दिया, अब वह उससे सभी काम ठीक करता है।

इस तरह वैज्ञानिक आविष्कारों ने अन्धे बहरे पुरुषों की क्रमबद्ध पर्याय को छिन्न-भिन्न कर डालने की चुनौती दी है।

इत्यादि अनेक आध्यात्मिक, शास्त्रीय, लौकिक तथा वैज्ञानिक प्रमाणों से क्रमबद्ध पर्याय का एकान्त सिद्धान्त असत्य सिद्ध होता है।

भौगोलिक क्रम-भङ्ग

प्राकृतिक दुर्घटनाओं-भूकम्प, ज्वालामुखी पर्वतों का विनाशकारी विस्फोट, उनसे लावा निकल

बहना तथा समुद्री भारी तूफान आदि- से अनेक भौगोलिक परिवर्तन हो जाते हैं। जैसे कि 16वीं शताब्दी में इटली का एक लाख मनुष्यों की जनसंख्या वाला पम्पियाई नामक नगर विसूविएस नामक ज्वालामुखी पर्वत के विस्फोट से प्रचुर मात्रा में निकली हुई राख से इस तरह दब गया था कि तीन सौ वर्ष तक उसके चिन्ह का भी पता न लगा।

काले समुद्र की तूफानी लहरों ने अपने तटवर्ती एक रूसी नगर को लगभग 200 वर्ष पहले समुद्र में डुबा दिया था जिससे समुद्र के भीतर समूचे मकान अब भी मिल रहे हैं।

इसके सिवाय आधुनिक अमरीकन इन्जीनियरों ने भी पनामा नहर बनाकर अटलांटिक तथा प्रशान्त महासागर को और स्वेज नहर द्वारा भूमध्यसागर तथा अरब सागर को मिला दिया है। अमेरिका ने अपने यहाँ एक कृत्रिम समुद्र बनाया है। भारत सरकार ने भाखड़ा बांध से सतलुज नदी का प्रवाह बीच में ही समाप्त कर दिया है। इत्यादि अनेक भौगोलिक परिवर्तन क्रमबद्ध-पर्याय का जीता जागता खण्डन कर रहे हैं। सारांश यह है कि प्रत्येक कार्य उपादान कारण तथा अन्तरंग बहिरंग निमित्त कारणों के मिलने पर ही होता है। निमित्तकारण जहाँ क्रम से मिलते जाते हैं वहाँ पर्याय क्रम से होती है, जहाँ निमित्त कारण अक्रम के मिलते हैं वहाँ पर्याय अक्रम से होती है। अशुद्ध पदार्थों को पर्यायों में न तो सर्वथा क्रम ही होता है और न सर्वथा अक्रम होता है।

नियत अनियतवाद पर अभिमत

(डॉ. श्री पं. महेन्द्रकुमारजी न्यायाचार्य ने तत्त्वार्थवृत्ति की प्रस्तावना में इन विषय पर अपना अभिमत प्रगट किया है, उसका कुछ अंश यहाँ देते हैं।)

नियतानियतत्ववाद- जैन दृष्टि में द्रव्यगत शक्तियाँ नियत हैं पर उनके प्रतिक्षण के परिणमन अनिवार्य होकर भी अनियत हैं। एक द्रव्य की उस समय की योग्यता से जितने प्रकार के परिणमन हो सकते हैं उनमें से कोई भी परिणमन, जिसके निमित्त और अनुकूल सामग्री मिल जायगी, हो जायेगा। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक द्रव्य की शक्तियाँ तथा उनसे होने वाले परिणमनों की जाति सुनिश्चित है। कभी भी पुद्गल के परिणमन जीव में तथा जीव के परिणमन पुद्गल में नहीं हो सकते। पर प्रतिसमय कैसा परिणमन होगा, यह अनियत है। जिस समय जो शक्ति विकसित होगी तथा अनुकूल निमित्त मिल जायेगा उसके बाद वैसा परिणमन हो जायेगा। अत: नियतत्व और अनियतत्व दोनों धर्म सापेक्ष हैं, अपेक्षा भेद से सम्भव है।

जीव द्रव्य और पुद्गल द्रव्य का ही खेल यह दृश्य जगत है। इनकी अपनी द्रव्य-शक्तियाँ नियत हैं। संसार में किसी भी शक्ति नहीं जो द्रव्य-शक्तियों में से एक को भी कम कर सके या एक को बढ़ा सके। इनका आविर्भाव और तिरोभाव पर्याय के कारण होता है। जैसे मिट्टी पर्याय को प्राप्त पुद्गल से तेल नहीं निकल सकता, वह सोना नहीं बन सकती, यद्यपि तेल और सोना भी पुद्गल ही बनता है, क्योंकि मिट्टी पर्याय वाले पुद्गलों की यह योग्यता तिरोभूत है, उसमें घट आदि बनने की, अंकुर को उत्पन्न करने की, बर्तनों के शुद्ध करने की, प्राकृतिक चिकित्सा में उपयोग आने की आदि पचासों पर्याय-योग्यताएँ विद्यमान हैं। जिसकी सामग्री मिलेगी, अगले क्षण में वही पर्याय उत्पन्न होगी। रेत भी पुद्गल है पर इस पर्याय में घड़ा बनने की योग्यता तिरोभूत है, अप्रकट है, उसमें सीमेंट के साथ मिलकर दीवाल पर पुष्ट लेप करने की योग्यता प्रकट है, वह काँच

बन सकती है या बही पर लिखी जाने वाली काली स्याही का शोषण कर सकती है। मिट्टी पर्याय में ये योग्यताएँ अप्रकट हैं। तात्पर्य यह है कि:-

(1) प्रत्येक द्रव्य की मूल द्रव्य शक्तियाँ नियत हैं उनकी संख्या में न्यूनाधिकता कोई नहीं कर सकता। पयार्य के अनुसार कुछ शक्तियाँ प्रकट रहती हैं और कुछ अप्रकट। इन्हें पर्याय-योग्यता कहते हैं। (2) यह नियत है कि चेतन का अचेतनरूप से तथा अचेतन का चेतन रूप से परिणमन नहीं हो सकना। (3) यह भी नियत है कि एक चेतन या अचेतन द्रव्य का दूसरे सजातीय चेतन या अचेतन द्रव्य रूप से परिणमन नहीं हो सकता। (4) यह भी नियत है कि दो चेतन मिल कर एक संयुक्त सदृश पर्याय उत्पन्न नहीं कर सकते जैसे कि अचेतन परमाणु मिल कर अपनी संयुक्त सदृश घट पर्याय उत्पन्न कर लेते हैं। (5) यह भी नियत है कि द्रव्य में उस समय जितनी पर्याय-योग्यताएँ हैं उनमें जिसके अनुकूल निमित्त मिलेंगे वही परिणमन आगे होगा, शेष योग्यताएँ केवल सद्भाव में रहेंगी। (6) यह भी नियत है कि प्रत्येक द्रव्य का कोई न कोई परिणमन अगले क्षण में अवश्य होगा। यह परिणमन द्रव्यगत मूल-योग्यताओं और पर्यायगत प्रकट योग्यताओं की सीमा के भीतर ही होगा, बाहर कदापि नहीं। (7) यह भी नियत है कि निमित्त उपादान द्रव्य की योग्यता का ही विकास करता है उसमें नूतन सर्वथा असद्भूत परिणमन उपस्थित नहीं कर सकता। (8) यह भी नियत है कि प्रत्येक द्रव्य अपने-अपने परिणमन का उपादान होता है। उस समय की पर्याय-योग्यता रूप उपादान शक्ति की सीमा के बाहर का कोई परिणमन निमित्त नहीं ला सकता। परन्तु-

(1) यही एक बात अनियत है कि 'अमुक समय में अमुक परिणमन ही होगा।' मिट्टी की पिंड पर्याय में घड़ा सकोरा सुराही दीपक आदि अनेक पर्यायों के प्रकटाने की योग्यता है। कुम्हार की इच्छा और क्रिया आदि का निमित्त मिलने पर उनमें से जिसकी अनुकूलता होगी वह पर्याय अगले क्षण में उत्पन्न हो जायेगी। यह कहना कि 'उस समय मिट्टी की यही पर्याय होनी थी, उनका मेल भी सद्भाव रूप से होना था, पानी की यही पर्याय होनी थी' द्रव्य और पर्यायगत योग्यता के अज्ञान का फल है।

नियतवाद नहीं- जो होना होगा वह होगा ही, हमारा कुछ भी पुरुषार्थ नहीं है, इस प्रकार के निष्क्रिय नियतिवाद के विचार जैनत्त्व-स्थिति के प्रतिकूल है। जो द्रव्यगत शक्तियाँ नियत हैं उनमें हमारा कोई पुरुषार्थ नहीं, हमारा पुरुषार्थ तो कोयले की हीरा पर्याय के विकास कराने में है। यदि कोयले के लिए उसकी हीरा पर्याय के विकास के लिये आवश्यक सामग्री न मिले तो वह जलकर भस्म बनेगा या फिर खान में ही पड़े-पड़े समाप्त हो जायेगा। इसका यह अर्थ नहीं है कि जिसमें उपादान शक्ति नहीं है उसका परिणमन भी निमित्त से हो सकता है, या निमित्त में यह शक्ति है जो निरुपादान को परिणमन करा सके।

नियतिवाद-दृष्टिविष- एक बार 'ईश्वरवाद' के विरुद्ध छात्रों ने एक प्रहसन खेला था। उसमें एक ईश्वरवादी राजा था, जिसे यह विश्वास था कि ईश्वर ने समस्त दुनिया के पदार्थों का कार्यक्रम निश्चित कर दिया है। प्रत्येक पदार्थ की अमुक समय में यह दशा होगी इसके बाद यह, सब सुनिश्चित है। कोई अकार्य होता तो राजा सदा यह कहता था कि- 'हम क्या कर सकते हैं? ईश्वर के नियति-चक्र में हमारा हस्तक्षेप उचित नहीं ''ईश्वर की मर्जी।'' एक बार कुछ गुण्डों ने राजा के सामने ही रानी का अपहरण किया। जब रानी ने रक्षार्थ

चिल्लाहट शुरू की और राजा को क्रोध आया तब गुण्डों के सरदार ने जोर से कहा- ''ईश्वर की मर्जी'' राजा के हाथ ढीले पड़ते हैं और वे गुण्डे रानी को उसके सामने ही उठा ले जाते हैं। गुण्डा रानी को भी समझाते हैं कि ''ईश्वर की मर्जी यही थी'' रानी भी विधिविधान में अटल विश्वास रखती थी और उन्हें आत्म-समर्पण कर देती है। राज्य में अव्यवस्था फैलती है और परचक्र का आक्रमण होना है और राजा की छाती में दुश्मन की जो तलवार घुसती है वह भी 'ईश्वर की मर्जी' इस जहरीले विश्वास-विष से बुझी हुई था और जिसे राजा ने विधि-विधान मान कर ही स्वीकार किया था। राजा और रानी गुण्डों और शत्रुओं के आक्रमण के समय ''ईश्वर की मर्जी'' ''विधि का विधान'' इन्हीं ईश्वरास्त्रों का प्रयोग करते थे। पर न मालूम उस समय ईश्वर क्या कर रहा था? ईश्वर भी क्या करता? गुण्डे और शत्रुओं का कार्यक्रम भी उसी ने बनाया था और वे भी 'ईश्वर की मर्जी' और 'विधिविधान' की दुहाई दे रहे थे। इस ईश्वरवाद में इतनी गुंजाइश तो थी कि यदि ईश्वर चाहता तो अपने विधान में कुछ परिवर्तन कर देता। आज कहान भाई की 'वस्तु विज्ञानसार' पुस्तक को पलटते समय उस प्रहसन की याद आ गई और ज्ञात हुआ कि यह नियतिवाद का कालकूट 'ईश्वरवाद' से भी भयंकर है। ईश्वरवाद में इतना अवकाश है कि यदि ईश्वर की भक्ति की जाय या सत्कार्य किया जाय तो ईश्वर के विधान में हेरफेर हो जाती है। ईश्वर भी हमारे सत्कर्म दुष्कर्मों के अनुसार ही फल का विधान करता है, पर यह नियतिवाद अभेद्य है। आश्चर्य तो यह है कि इसे 'अनन्त पुरुषार्थ' का नाम दिया जाता है। यह कालकूट कुन्दकुन्द, अध्यात्म, सर्वज्ञ, सम्यग्दर्शन और धर्म की शक्कर में लपेट कर दिया जा रहा है। ईश्वरवादी साँप के जहर का एक उपाय (ईश्वर) तो है पर इस नियतिवादी कालकूट का इस भीषण दृष्टि-विष का कोई उपाय नहीं; क्योंकि हर एक द्रव्य की हर समय की पर्याय नियत है।

मर्मान्त वेदना तो तब होती है जब इस मिथ्या एकांत विष को अनेकान्त अमृत के नाम से कोमलमति नई पीढ़ी को पिला कर उन्हें अनन्त पुरुषार्थी कहकर सदा के लिए पुरुषार्थ से विमुख किया जा रहा है।

पुण्य और पाप क्यों?- जब प्रत्येक जीव का प्रतिसमय का कार्यक्रम निश्चित है, अर्थात् परकतृत्व तो है ही नहीं, साथ ही स्व-कर्तृत्व भी नहीं है, तब क्या पुण्य और क्या पाप? किसी मुसलमान ने देव प्रतिमा तोड़ी, तो जब मुसलमान को उस समय प्रतिमा को तोड़ना ही था, प्रतिमा को उस समय टूटना ही था, सब कुछ नियत था तो बिचारे मुसलमान का क्या अपराध? वह तो नियति-चक्र का दास था। कोई याज्ञिक ब्राह्मण बकरे की बलि चढ़ाता है तो क्यों उसे हिंसक कहा जाये- 'देवी की ऐसी ही पर्याय होनी थी, बकरे के गले को कटना ही था, छुरे को उसकी गर्दन के भीतर घुसना ही था, ब्राह्मण के मुँह में मांस जाना ही था, वेद में ऐसा ही लिखा जाना था।' इस तरह पूर्वनिश्चित योजनानुसार जब घटनाएँ घट रही हैं तो उस बिचारे को क्यों हत्यारा कहा जाये? हत्याकाण्ड रूपी घटना अनेक द्रव्यों के सुनिश्चित परिणमन का फल है। जिस प्रकार ब्राह्मण के छुरे का परिणमन बकरे के गले के भीतर घुसने का नियत था उसी प्रकार बकरे के गले का परिणमन भी अपने भीतर छुरा घुसवाने का निश्चित था। जब इन दोनों नियत घटनाओं का परिणाम बकरे का बलिदान है तो इसमें क्यों ब्राह्मण को हत्यारा कहा जाये? स्त्री का परिणमन ऐसा ही होना था और पुरुष का भी एकसा ही, दोनों के नियत परिणमनों का नियत मेलरूप दुराचार भी नियत ही था फिर उसे गुण्डा और दुराचारी क्यों कहा जाये? इस तरह

इस श्रोत्र-विषरूप (जिसके सुनने से ही पुरुषार्थ-हीनता का नशा आता है) नियतिवाद में जब अपने भावों का भी कर्तृत्व नहीं है अर्थात् ये भाव सुनिश्चित हैं, तो पुण्य-पाप, हिंसा-अहिंसा, सदाचार-दुराचार, सम्यग्दर्शन और मिथ्यादर्शन क्या?

गोडसे हत्यारा क्यों?- यदि प्रत्येक द्रव्य का प्रति समय का परिणमन नियत है, भले ही वह हमें न मालूम हो, तो किसी कार्य को पुण्य और किसी कार्य को पाप क्यों कहा जाये? नाथूराम गोडसे ने महात्मा जी को गोली मारी, तो क्यों नाथूराम को हत्यारा कहा जाये? नाथूराम का उस समय वैसा ही परिणमन होना था और गोली का और पिस्तौल का भी वैसा ही परिणमन निश्चित था। अर्थात् हत्या, नाथूराम, महात्मा जी, पिस्तौल और गोली आदि अनेक पदार्थों के नियत कार्यक्रम का परिणाम है। इस घटना से सम्बद्ध सभी पदार्थों के परिणमन नियत थे। और उस सम्मिलित नियति का परिणाम हत्या है। यदि यह कहा जाता है कि नाथूराम महात्मा जी के प्राणवियोगरूप परिणमन में निमित्त हुआ है, अत: अपराधी है तो महात्माजी को नाथूराम के गोली चलाने में निमित्त होने पर क्यों न अपराधी ठहराया जाये? जिस प्रकार महात्माजी का यह परिणमन निश्चित था उसी प्रकार नाथूराम का भी। दोनों नियतिचक्र के सामने समान रूप से दास थे। सो यदि नियतिदास नाथूराम हत्या का निमित्त होने से दोषी है, तो महात्माजी नाथूराम की गोली चलाने रूप पर्याय में निमित्त होने से दोषी क्यों नहीं? इन्हें जाने दीजिए, हम तो यह कहते हैं कि- पिस्तौल से गोली निकलनी थी और गोली को गांधी जी की छाती में घुसना था इसलिए नाथूराम और महात्माजी की उपस्थिति हुई। नाथूराम तो गोली और पिस्तौल के उस अवश्यमभावी परिणमन का एक निमित्त था जो नियति चक्र के कारण वहाँ पहुँच गया। जिनकी नियति का परिणाम हत्या नाम की घटना है। वे सब पदार्थ समान रूप से नियतिचक्र से प्रेरित होकर उस घटना में अपने अपने नियत भवितव्य के कारण उपस्थित हैं। अब उनमें से क्यों मात्र नाथूराम को पकड़ा जाता है? बल्कि हम सब को उस दिन ऐसी खबर सुननी थी और श्री आत्माचरण को जज बनना था इसलिए वह सब हुआ। अत: हम सब को और आत्माचरण को ही पकड़ना चाहिए। अत: इस नियतिवाद में न कोई पुण्य है न पाप, न सदाचार न दुराचार। जब कर्तृत्व ही नहीं तब क्या सदाचार क्या दुराचार? नाथूराम गोडसे को नियतिवाद के आधार पर ही अपने बचाव करना चाहिए था, और सीधा आत्माचरण के ऊपर टूटना चाहिए था कि चूंकि तुम्हें हमारे मुकदमे का जज होना था इसलिये इतना बड़ा नियतिचक्र चला और हम सब उसमें फंसे। यदि सब चेतनों को छुड़ाना है तो पिस्तौल के भवितव्य को दोष देना चाहिए, न पिस्तौल का उस समय वैसा परिणमन होना होता न वह गोडसे के हाथ में आती और न गांधीजी की छाती में छिदती। सारा दोष पिस्तौल के नियत परिणमन का है। तात्पर्य यह है कि इस नियतिवाद में सब साफ है। व्याभिचार, चोरी, दगाबाजी और हत्या आदि सब कुछ उन उन पदार्थों के नियत परिणमन के परिणाम हैं, इसमें व्यक्ति विशेष का क्या दोष? अत: इस सत्-असत्-लोपक, पुरुषार्थ-विघातक नियतिवाद विष से रक्षा करनी चाहिए।

नियतिवाद में एक ही प्रश्न एक ही उत्तर- नियतिवाद में एक उत्तर है- 'ऐसा ही होना था, जो होना होगा सो होगा ही' इसमें न कोई तर्क है, न कोई पुरुषार्थ और न कोई बुद्धि। वस्तुव्यवस्था में इस प्रकार के मृत-विचारों का क्या उपयोग? जगत् में विज्ञानसम्मत कार्यकारण भाव है। जैसी उपादान योग्यता और जो निमित्त

होंगे तदनुसार चेतन-अचेतन का परिणमन होता है। पुरुषार्थ निमित्त और अनुकूल सामग्री के जुटाने में है। एक अग्नि है, पुरुषार्थी यदि उसमें चन्दन का चूरा डाल देता है तो सुगन्धित धुआँ निकल कर कमरे को सुवासित कर देता है, यदि बाल आदि पड़ते हैं तो दुर्गन्धित धुआँ उत्पन्न हो जाता है। यह कहना अत्यन्त भ्रान्त है कि चूरा को उसमें पड़ना था, पुरुष को उसमें डालना था, अग्नि को उसे ग्रहण करना ही था इसमें यदि कोई हेर-फेर करता है तो नियतिवादी का वही उत्तर कि "ऐसा ही होना था।" मानो जगत के परिणमनों को ऐसा ही होना था, इस नियति-पिशाचिनी ने अपनी गोद में सभी कुछ ले रखा हो।

नियतिवाद में स्वपुरुषार्थ भी नहीं- नियतिवाद में अनन्त में अनन्त पुरुषार्थ की बात तो जाने दीजिये स्वपुरुषार्थ भी नहीं है। विचार तो कीजिये जब हमारा प्रत्येक क्षण का कार्यक्रम सुनिश्चित है और अनन्त काल का, उसमें हेर-फेर का हमको भी अधिकार नहीं है तब हमारा पुरुषार्थ कहाँ? और कहाँ हमारा सम्यग्दर्शन? हम तो एक महानियति चक्र के अंश है और उसके परिचलन के अनुसार प्रतिक्षण चल रहे हैं। यदि हिंसा करते हैं तो नियत है, व्याभिचार करते हैं तो नियत है चोरी करते हैं तो नियत है, पापचिन्ता करते हैं तो नियत है। हमारा पुरुषार्थ कहाँ होगा? कोई भी क्षण इस नियतिभूत की मौजूदगी से रहित नहीं है, जबकि हम साँस लेकर कुछ अपना भविष्य-निर्माण कर सकें।

भविष्य-निर्माण कहाँ?- इस नियतिवाद में भविष्य-निर्माण की भारी योजनाएँ हवा है। जिसे हम भविष्य कहते हैं वह भी नियतिचक्र में सुनिश्चित है और होगा ही। जैन दृष्टि तो यह कहती है कि- 'तुममें उपादान-योग्यता प्रति समय अच्छे और बुरे बनने की, सत् और असत् होने की है, जैसा पुरुषार्थ करोगे, जैसी सामग्री जुटाओगे अच्छे बुरे भविष्य का निर्माण स्वयं कर सकोगे।' पर जब नियतिचक्र निर्माण करने की बात पर ही कुठाराघात करके उसे नियत या सुनिश्चित कहता है तब हम क्या पुरुषार्थ करें? हमारा हमारे ही परिणमन पर अधिकार नहीं है क्योंकि वह नियत है। पुरुषार्थ-भ्रष्टता का इससे व्यापक उपदेश इससे अधिक दूसरा नहीं हो सकता। इस नियतिचक्र में सबका सब कुछ नियत है, उसमें अच्छा क्या बुरा क्या? हिंसा क्या अहिंसा क्या?

निरंतर.......

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-4902433

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री	संयुक्त सचिव	कोषाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष
राजेन्द्र जैन	**अरविन्द जैन,** सागर	**पवन जैन**	**राजेश जैन 'रज्जन',** दमोह	**इंजी. महेन्द्र जैन**
9425140653	9893178458	9826240876	9425095917	9425601832

सदस्य -डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन

संरक्षक : श्रीमती जैन शीलरानी नायक, पनागर • श्री सुनील कुमार जैन एवं श्री महावीर प्रसाद जैन-सतना • श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह • श्रीमति जैन नीतिका एवं हर्ष कोछल्ल , हैदराबाद • **सदस्य : जयपुर :** श्री जैन शांतिलाल बागड़िया।

गतांक से आगे

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

-आर्यिकारत्न श्री प्रतिभामति माताजी

अब पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव की पूर्ण तैयारी हो चुकी थी। मुनिवर की आगवानी के साथ महोत्सव की शुरुआत होने की घड़ियाँ समाप्त होने वाली थीं।

दिनांक 27 जनवरी से 1 फरवरी 2008 तक श्रीमज्जिनेन्द्र त्रय गजरथ पंचकल्याणक महामहोत्सव दमोह नगर के तहसील ग्राउण्ड के विशाल पंडाल में ध्वजारोहण के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सभी इन्द्र-इन्द्राणी मुनिवर आर्जवसागरजी ससंघ के पीछे जिनबिम्ब सह जुलूस के साथ आते हुए ऐसे प्रतीत हो रहे थे कि मानो स्वर्ग से सारे देवता बड़े वैभव विभूति के साथ पधार रहे हैं। मंगल ध्वजारोहण के साथ पण्डाल एवं मण्डप की शुद्धि इन्द्राणीयों से की गयी एवं पं.गुलाबचन्द पुष्प व ब्र. पं.जयनिशान्त आदि के द्वारा सकलीकरण क्रिया, पात्र शुद्धि पूर्वक सम्पन्न की गयीं।

पंचकल्याणक में पहले दिन गर्भ कल्याणक पूर्व रूप में देव आज्ञा, गुरु आज्ञा, घट यात्रा, पण्डाल शुद्धि, वेदी शुद्धि, ध्वजारोहण, अभिषेक, नित्य पूजन, यागमण्डल विधान प्रारम्भ हुआ तथा रात में माता के सोलह स्वप्न व अष्टकुमारियों की सेवा आदि के दृश्य दर्शाये गये। दूसरे दिन गर्भकल्याणक उत्तर रूप में प्रात: नित्य क्रियाओं के साथ माता की गोद भराई, और रात के सोलह स्वप्नों का फल दर्शन आदि कार्यक्रम हुये। तीसरे दिन जनम कल्याणक में प्रात: शुभ मुहूर्त्त में जिन बालक का जन्म होना, सौधर्म इन्द्रादि देव-गण भूतल पर अवतरण और शचि इन्द्राणी द्वारा जिनबालक को प्रसूति गृह से बाहर लाना, सौधर्म इन्द्र का ताण्डव नृत्य और जिन बालक को लेकर सौधर्म इन्द्र द्वारा ऐरावत हाथी पर सवार होकर सुमेरु पर्वत पर ले जाना, वहाँ क्षीरोदधि के जल से जिन बालक का जन्माभिषेक करना इत्यादि दृश्य दिखाये गये। और रात में पालना झुलाना, बाल क्रीड़ा आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। चौथे दिन दीक्षा कल्याणक के समय आदिनाथ प्रभु का राजदरबार, 32 हजार मुकुटबद्ध राजाओं की भेंट, सम्मान, पश्चात् आदिकुमार द्वारा जनता के लिए षट्कर्म सिखाया जाना, पुत्रियों को अक्षर विद्या, अंक विद्या सिखाना, व आदिकुमार का वैराग्य के कारण रूप में नीलाञ्जना का नृत्य व उसकी मृत्यु होना। लौकान्तिक देवों द्वारा वैराग्य की सराहना का दृश्य और पालकी पर आरूढ़ होकर तीर्थंकर आदिकुमार का वन की ओर गमन होना एवं वहाँ वट वृक्ष के नीचे दीक्षा धारण करना। गुरुवर आर्जवसागरजी द्वारा दीक्षा विधि सम्पन्न हुयी। रात को सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। पांचवे दिन केवलज्ञान कल्याणक में प्रात: आदि मुनिराज की आहार चर्या का दृश्य दिखाया गया। पश्चात् दोपहर में अनेक प्रतिमाओं के ऊपर गुरुवर के द्वारा सूर्यमंत्र, अंकन्यास आदि क्रियाओं के माध्यम से केवलज्ञान का संस्कार हुआ। समवसरण की रचना एवं गणधर के रूप में गुरुवर आर्जवसागरजी द्वारा दिव्यध्वनि रूप उपदेश हुआ। अन्तिम दिन प्रात: भगवान का मोक्ष कल्याणक का दृश्य दिखाया गया और त्रय गजरथ फेरी तथा मन्दिर की वेदी में जिन बिम्ब स्थापना आदि कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुये।

गुरुवर आर्जवसागरजी के पाँचों दिन के प्रात: एवं मध्यान्ह के प्रवचनों में पाँचों कल्याणक के विषय, त्याग, वैराग्य, सम्यग्दर्शन, निमित्त-उपादान, नियत-अनियत, भाग्य-पुरुषार्थ, शुद्धोपयोग-स्वरूपाचरण और ध्यान आदि के विषय पर मुख्यता से प्रकाश डाला गया। पंचकल्याणक के विशाल पंडाल में देश के विभिन्न प्रान्तों एवं नगर-उपनगरों से भव्य लोगों ने आकर अपूर्व लाभ लिया। प्रतिदिन मुनिवर के दर्शनार्थ एवं आशीष पाने विधायक, मंत्री आदि अनेक नेता गण भी उपस्थित होते रहे। पंचकल्याणक की व्यवस्था में एस.के. जैन, डी.आर. जैन, चन्द्रकुमार जैन, संजीव जैन, राजेन्द्र सिंघई, और रतनचन्द्र जैन आदि ने भी सक्रिय भूमिका निभाई। अंतिम गजरथ महोत्सव के दिन दूर-सुदूर से जनता का ऐसा विशेष जन शैलाब एकत्रित हुआ मानो पूरे देश की जनता ही उमड़ पड़ी हो, पैर रखने के लिए भी जगह मुश्किल हो गई। पूरे मैदान में विशेष त्रय गजरथ की फेरी हेतु पण्डाल के चारों ओर परिक्रमा पथ बनाया गया था। जिसमें सबसे पहले ध्वजदण्ड फिर अनेक तरह के वाद्य और गजरथ के आगे मुनिवर आर्जवसागरजी ससंघ चल रहे थे। साथ में समाज के विशिष्ट श्रीमन्त श्रेष्ठीगण तथा जयंत मलैया, भार्गवजी आदि चल रहे थे। पुलिस की विशिष्ट व्यवस्था चारों तरफ की गयी थी और परिक्रमा के बाहर से एवं पण्डाल में सभी लोग जय-जयकार लगा रहे थे। महिलायें मंगल गीत गा रहीं थीं। और रथ में बैठ जिनेन्द्र प्रभु को आसमान में लिए इन्द्रादिगण विशिष्ट शोभा पा रहे थे। सातों परिक्रमायें होती ही प्रतीक्षा थी गुरुवर के आशीर्वाद की, और गुरुवर आर्जवसागरजी को पण्डाल तक पहुँचाने में बड़ा मुश्किल-सा हो रहा था क्योंकि लोग चरण छूने के लिए आतुर हो रहे थे। जब सेवक संघ द्वारा रास्ता बनाया गया तब मुनिवर पण्डाल में आसन पर विराजमान हुये और त्रय गजरथ महोत्सव की खुशीयों से भरी जनता नाच-नाच कर झूम उठी। पश्चात् प्रवचन के पूर्व आभार प्रदर्शन, स्वागत सम्मान समारोह एवं मंगलाचार हुआ। पश्चात् मुनिवर का आचरण प्रधान प्रवचन हुआ। जिसमें इस विषय को मुख्यता से बतलाते हुये मुनिवर ने कहा कि- जितने आचार-विचार सह भावों की शुद्धि होती है, जितनी शुद्धि रीती से मंत्रों का उच्चारण होता है उतना ही अनुष्ठान सातिशय मंगलमय सम्पन्न होता है और शास्त्र में कथित दृढ़ संकल्पी ऊर्विला रानी के जिनरथ की विद्याधरों ने आकाश मार्ग से प्रभावना की थी और जिनधर्म की विजय पताका कैसे लहरायी थी? इसका विवेचन करते हुए जनता को अपने जीवन में व्यसन मुक्ति पूर्वक सदाचार, जिन धर्माचार पूर्वक जिनधर्म की प्रभावना निरन्तर करते हुए धर्म की रक्षा करने का आशीर्वाद दिया।

समारोह सानन्द सम्पन्न होने के उपरान्त पण्डाल में स्थित जिनबिम्बों को गाजे-बाजे के जुलूस के साथ सिविलवार्ड जिनमंदिर तक लाया गया। जुलूस में मुनिवर भी साथ चल रहे थे। इन्द्र-इन्द्राणियाँ भी अष्टमंगल ध्वजादि पात्र लेकर चल रहे थे और अपार जन समूह के जय-जयकारों के साथ युवागण खुशी भरा नृत्य कर रहे थे और जिनालय पहुँचते ही शुभ मुहूर्त में जिन-बिम्ब स्थापना का कार्यक्रम हुआ। शिखर पर स्वर्णमयी कलशारोहण किया गया एवं पीतल के ध्वजदण्ड की स्थापना की गयी। ऐसे अभूतपूर्व सानन्द सम्पन्न हुये कार्यक्रम की चर्चा सर्वत्र चलती रही। एक दिन रविवार को पात्रों के सम्मान का कार्यक्रम के अन्त में मुनिवर के पावन प्रवचन हुये। पश्चात् कुछ दिन ठहरकर वसुन्धरा कालोनी आदि में कलशारोहण आदि का महोत्सव

सम्पन्न कराने के उपरान्त पूर्व से ही जिनका निवेदन लगा हुआ था कि हमारे नगर में मानस्तम्भ की प्रतिष्ठा हो ऐसे नगर छतरपुर की ओर मुनिवर का ससंघ मंगल विहार होने की संभावना लोगों को मालूम पड़ी और इसी बीच नैनागिरि, द्रोणागिरि के दर्शन के भी भाव उमड़ पड़े।

जब एक दिन मध्यान्ह सामायिक के उपरान्त शुभ मुहुर्त में बिना संकेत के ही मुनिवर का विहार नरसिंहगढ़ की ओर हो गया। विहार की खबर पावन की भाँति नगर के घर-घर तक पहुँच गई। सभी लोग अपने जैसे के तैसे काम-काज छोड़कर मुनिवर के दर्शनार्थ दौड़ पड़े और थोड़े ही दूर में मानो पूरा नगर ही मुनिसंघ के दर्शन को आतुर हो गया हो, कोई चरण छू रहे थे, कोई बार-बार नमोस्तु बोल रहे थे, किन्हीं की आँखों से अश्रु-धारा बह रही थी कि अब कब मुनिवर का सान्निध्य मिलेगा। इतना अपूर्व लाभ हमको मिला है इसको हम भुला नहीं सकते हैं और सभी लोग जय-जयकारों के साथ मुनिवर के साथ आगे बढ़ते चले गये और बीच में कहते चले गये कि अभी थोड़े दिनों और लाभ मिला होता तो कितना अच्छा होता। मुनिवर भी समझा रहे थे कि करीब 7 महिनों के सान्निध्य से क्या तृप्ति नहीं हुई? हाँ; ठीक है ऐसी भावना भी आगे बनी रहना चाहिए तभी तो आगे मुनिसंघ जल्दी मिलेंगे और बीच-बीच में कई बार संकेत भी करते जा रहे थे कि अब बहुत दूर हो गया तुम लोग अपने गृह की ओर वापिस लौट जाओ। लेकिन लोगों का अंतरंग लौटने का नहीं कर रहा था। आखिर रात्रि विश्राम के स्थान तक काफी संख्या में लोग आये। दूसरे दिन भी नरसिंहगढ़ जिनालय तक काफी लोग दर्शनार्थ आते ही रहे और साथ में छतरपुर के लोग भी चल रहे थे और आहारचर्या के उपरान्त बहुत दिनों से प्रतीक्षारत फुटेरा ग्राम के लोग भी अपने नगर में पधारने का निवेदन करने आ ही गये। सभी ने श्रीफल अर्पित कर नम्र निवेदन किया है कि हे मुनिवर! आपकी जिस काया ने 'पारसचन्द' के रूप में जन्म लिया था उस परिवार की शाखायें और बढ़ चुकी हैं उनको भी दर्शन का लाभ दीजिए और आपके बचपन के मित्र आपको हमेशा स्मरण में लाते हैं उन्हें भी धर्म उपदेश दीजिए। कुछ भी हो अगर आपको ये सब नहीं चाहिए हो तो कम-से-कम परिवार के द्वारा संस्थापित (निर्मित) चन्द्रप्रभु जिनालय का दर्शन तो जरूर कीजिए। इसके निमित्त सारे गाँव के लोग आपके मोक्षमार्ग में जाने के 24 साल बाद प्रथम पदार्पण से आपकी ज्ञान की प्रतिभा से बड़े लाभान्वित होंगे। यह सब सुनते हुए मुनिवर नम्र दृष्टि पूर्वक मुस्कराते हुए केवल मौन से आशीर्वाद दे रहे थे।

मध्यान्ह सामायिक के उपरान्त मुनिवर आर्जवसागरजी का ससंघ विहार फुटेराकलाँ की ओर हो गया। फुटेरा ग्राम में सुभाष, राजेश, सुरेन्द्र, वीरेन्द्र, अमित, दीपक आदि और दमोह आदि नगरों के लोग भी साथ चल रहे थे। रास्ते के मध्य ग्राम में रात्रि विश्राम करके प्रातःकाल फुटेरा ग्राम की ओर विहार चला। संघस्थ अर्पणसागरजी भी गुरुवर के पूर्व अवस्था के जन्म गाँव को देखने के लिए उत्साहित हुए चल रहे थे और पूर्व अवस्था के लोग मुनिवर के पूर्व अवस्था से सम्बन्धित संस्मरण भी सुनाते जा रहे थे। ज्यों-ज्यों नगर के निकट पहुँच गये त्यों-त्यों जैन श्रावक श्राविकाओं के साथ अपने नगर में जन्में मुनिवर आर्जवसागरजी के दर्शन करने हेतु जैनेतर समाज के लोग भी आकर अपनी भक्ति प्रदर्शित करने लगे। नगर के नजदीक पहुँचते ही समाज के विशिष्ट एवं श्रेष्ठीगण मंगल वाद्यों के साथ मुनिवर की आगवानी के लिए आये और चरणों में नमन करके

जयकारों के साथ नगर की ओर बढ़ने लगे। नगर प्रवेश पर देखा तो जगह-जगह तोरण द्वार बांधे गये थे। गृहों के सामने रंगोली से चौक पूरे गये थे और मंगल कलश रखकर आरतियाँ भी सजाई गयी थीं। नगर को दुल्हन जैसा सजा हुआ देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कोई महापर्व का दिन ही मनाया जा रहा हो। लोग मुनिवर के चरण छूने के लिए आतुर हो रहे थे। घर-घर के सामने पाद प्रक्षालन और भक्तगण मुनिवर की आरती उतार रहे थे। क्रमश: आगे बढ़ते हुए मुनिसंघ का पदार्पण जिनालय में हुआ। जिनालय में जिन बिम्बों का दर्शन कर सभी को अपूर्व संतोष हुआ। मुनिवर ने देखा पूर्व में तो एक छोटा (चैत्यालय के सदृश्य) जिन मन्दिर था लेकिन अब कितना विस्तृत तीन मंजिल में मन्दिर बनके खड़ा हुआ है। लोगों ने मुनिवर को बतलाया कि समाज की वृद्धि होने से आपके पूर्व जन्म स्थान को भी मिलाकर जिनालय का विस्तार कर दिया गया है। वह पवित्र जन्मस्थान भी मन्दिर की पवित्रता में सम्मिलित हो गया है। अब बहुत सारे लोग एक साथ बैठकर पूजन-विधान सरलता से कर सकते हैं। तदुपरान्त मुनिवर का रोड के किनारे बनाये पण्डाल में प्रवचन सम्पन्न हुआ। प्रवचन के पूर्व बाहर से पधारे एवं समाज के प्रमुख वर्ग ने मुनिसंघ के चरणों में शीतकालीन प्रवास हेतु श्रीफल अर्पित किये। अतिथि सत्कार भी किया गया, मंगलाचरण सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। तदुपरान्त आहारचर्या हेतु मुनिसंघ आहार को निकला। आहारचर्या करवाने एवं देखने के लिए जनता भक्तिपूर्वक उमड़ पड़ी। आहार होते ही मंगल गीत गाये गये एवं दिव्य वाद्य घोष हुये और अतिथि निवास में मुनिवर का विहार बटयागढ़, केरबना से नैनागिरि की ओर हो गया। लोग आश्चर्यचकित होते हुए कोई अश्रुपात करते हुए ऐसे निर्मोही मुनिवर के पीछे-पीछे दौड़ने लगे और पैर पकड़कर कहने लगे कि हम लोगों ने तो शीतकालीन प्रवास की आशा लगायी थी लेकिन आप तो एक ही दिन में निकल पड़े कम से कम कुछ दिन रहकर हमारे गृहों में चरण पड़ते हमारी कुटिया पवित्र हो जाती। मुनिवर ने कहा कि छतरपुर नगर में मानस्तम्भ प्रतिष्ठा का कार्यक्रम है। वहाँ के लोग भी साथ चल रहे हैं। बीच में कई ग्राम आयेंगे और सिद्धक्षेत्र नैनागिरि, द्रोणागिरि का भी दर्शन करना है इसलिए अभी समय का अभाव है। फिर कभी देखेंगे।

बटयागढ़ पहुँचे वहाँ से केरबना होते हुए सिद्धक्षेत्र नैनागिरि की ओर हो गया। जंगल और पहाड़ी से होते हुए जहाँ पर पार्श्वनाथ का समवशरण व वरदत्तादि पाँच मुनिराज निर्वाण को प्राप्त किया ऐसे सिद्धक्षेत्र नैनागिरि पहुँचे। नैनागिरि में पार्श्वनाथ समवशरण का दर्शन किया और पर्वत पर बने जिनालयों एवं चौबीसी युक्त पार्श्वनाथ भगवान का दर्शन करते हुए मुनिवर को अपनी पुरानी स्मृतियाँ ताजी हो गयी कि ऐसे ही क्षेत्र पर पहाड़ी पर बने जिनालयों के बीच प्रांगण में सन् 1985-86 में जब हम क्षुल्लक अवस्था में थे तब आचार्यश्री (विद्यासागरजी) हम सबको मूलाचार ग्रन्थ की वाचना सुनाया (पढ़ाया) करते थे और सभी साधु और आचार्यश्री के साथ हम इन्हीं मन्दिरों में सामायिक और रात्रि विश्राम आदि किया करते थे। सन् 1986 के शीतकालीन एवं पंचकल्याणक और गजरथ के दौरान इसी क्षेत्र पर समवशरण मन्दिर का पंचकल्याणक एवं प्रथम बार आर्यिका दीक्षायें और क्षुल्लक दीक्षायें सम्पन्न हुई थीं। स्वल्पकाल के वास्तव के दौरान दलपतपुर की ओर विहार हो गया। आहारचर्या मुनिश्री सुमतिसागरजी के पूर्व गृहस्थाश्रम के घर-घर नवधा भक्ति पूर्वक

सम्पन्न हुईं एवं लोगों को मुनिश्री का प्रवचन भी सुनने का सौभाग्य मिला। मुनिवर को रुकने का बहुत निवेदन होते हुए भी मध्यान्ह में राहतगढ़ की ओर मुनिसंघ का विहार हो गया। यहाँ भी प्रवचन और आहारचर्या सम्पन्न हुयी और मध्यान्ह में सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि की ओर चल पड़े। जंगल के मार्ग से होते हुए गुरुदत्तादि मुनीन्द्र जहाँ से मोक्ष पधारे ऐसे सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि पहुँचे। द्रोणागिरि पर्वत पर बने सर्व जिनालयों को भाव सहित वंदना की और आहारचर्या सम्पन्न हुयी। तदुपरान्त छतरपुर नगर की ओर मंगल विहार किया। दमोह से ही छतरपुर वासी राजेन्द्र जैन आदि के साथ एक ट्रेक्स गाड़ी में चौके आदि की बड़ी व्यवस्थाओं को लेकर के श्री चन्द्रकुमार जैन (न्युकिरण रोडवेज) धनीराम (डी.आर) जैन और नन्हा (दीक्षा किराना) ये सभी लोग विहार का उत्तम लाभ लेते हुये मुनिवर के साथ छतरपुर तक पहुँचे।

क्रमशः..........

मन को नियंत्रित करने वाला ही सब कुछ पाता है

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

परम पूज्य संत श्री आर्जवसागर जी मुनिराज ने ध्यान विषय पर चल रही विशेष प्रवचन शृंखला में ध्यान से जुड़े कुछ विशेष तथ्य प्रकट किये उन्होंने श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि केवल हाथ पर हाथ रखकर, आसन जमाकर बैठने से ही ध्यान नहीं होता। ध्यान चलते फिरते उठते बैठते हुए भी ध्यान होता है क्योंकि ध्यान का अर्थ सद्भावना एवं विचार है। शुभ भावनाओं एवं शुभ विचारों से धर्म ध्यान होता है एवं अशुभ भावों एवं बुरे विचारों से अशुभ ध्यान होता है। बुरी भावनाओं एवं अशुभ विचारों से बचने के लिए हम एक निश्चित समय में निश्चित (उचित) स्थान पर विशेष आसन में बैठकर ध्यान लगाते हैं। लेकिन केवल आसन जमाने से ध्यान नहीं होता ध्यान के लिए मन पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है क्योंकि जिसने मन को नियंत्रित कर लिया उसी ने सब कुछ पाया है। हमारी अप्रशस्त(बुरी) भावनाओं से संसार भ्रमण चलता रहता है। ध्यान में मन की स्थिरता के लिए एकत्व भावना आवश्यक है, इस भावना में चिंतन करना चाहिए कि मेरी अपनी आत्मा के सिवाय संसार में अणु मात्र भी मेरा नहीं है। सभी जीवों के प्रति समान दृष्टि रखनी चाहिए। शत्रु-मित्र अपना-पराया सब छोड़कर राग-द्वेष नहीं करना चाहिए। बैर-भाव रखने वाला ध्यान नहीं कर सकता वह केवल ध्यान का ढोंग करता है। इष्ट वस्तुओं के वियोग होने पर उनकी चिंता करना एवं अनिष्ट वस्तुओं के मिलने पर रोने बिलखने एवं दुःख मनाने से जो ध्यान होता है वह आर्त्तध्यान है। आर्त्तध्यान करने वाले जन्म-जन्म तक संसार में भटकते रहते हैं। संसार बंधनों से छूटने के लिए धर्म-ध्यान की ओर बढ़ना होगा। सच्चा ध्यानी (योगी) संसारिक सुखों की कामना के लिए ध्यान नहीं करता है। वह संसार बंधनों से मुक्त होने के लिए ध्यान करता है। जिसने इन्द्रियों के विषय भोगों का परित्याग करके संयमित जीवन स्वीकार कर लिया है एवं संसार के छोटे बड़े जीवों के प्रति दया भाव जगा लिया है, उसे ही धर्म ध्यान प्राप्त हो सकता है।

साभार : आर्जव-वाणी

अहिंसा और विज्ञान

प्रवचनकार-आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज
लेखन - प्रस्तुति-संघस्थ मुनिश्री नमितसागरजी महाराज

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

मंगलाचरण- **मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी।**
मंगलं कुन्दकुन्दार्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं

हम लोग गत तीन अप्रैल से भगवान महावीर का 2616 वाँ जन्म जयंती समारोह मना रहे हैं। प्रथम दिन दमोह के सेन्ट्रल जेल में प्रवचन हुए। बन्दियों को महावीर की अहिंसा का स्वरूप समझाया। अधिकारी वर्ग व बन्दियों को अहिंसा का महत्त्व बताते हुए उस अनुरूप पालने का सुझाव दिया। चार अप्रैल को दमोह में कार्यरत विभिन्न संगठनों के बीच संगोष्ठी हुई। पाँच तारीख को दमोह जिले में पाठशालाओं के बच्चों और शिक्षकों ने धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया, करीब बावीस पाठशालायें भाग लेने के लिये उपस्थित हुईं। कल जैन युवा विद्वानों ने अपने-2 आलेख प्रस्तुत किये, उसी क्रम में आज यहाँ विभिन्न समुदाय से डॉक्टर्स, वकील, अधिकारी वर्ग और अन्य विशिष्ट जन उपस्थित हैं। कुछ विशिष्ट जनों ने अहिंसा के विषय को प्रस्तुत किया। काफी कुछ विचार भगवान महावीर की अहिंसा से मिलते हैं। विशेष तथा सभी ने अहिंसा को वर्तमान जीवन में महत्त्व दिया। इस तरह से अहिंसा को वर्तमान जीवन में महत्त्व दिया। इस तरह से अहिंसा के विषय पर संगोष्ठी चल रही है और नौ अप्रैल को विशेष कार्यक्रम है जिसमें दमोह जिले से व अन्य प्रान्तों से भक्त उपस्थित होंगे और हम 2616 वाँ जन्म जयन्ती समारोह सम्पन्न करेंगे।

किसी को कष्ट पहुँचाना हिंसा है उसके विपरीत अहिंसा है। विशिष्ट ज्ञान को विज्ञान कहते हैं अर्थात् जो ज्ञान जीव की आत्मा की ओर जाता है वह विज्ञान है अहिंसामयी परिणाम जीवात्मा को विशिष्ट ज्ञान के अबलम्बन से आत्मानुभाव व आत्मा से साक्षात्कार करवाता है। आज विशेषतया डॉक्टर्स-वकील-अधिकारी वर्ग व उपस्थित वित्त मंत्री आप लोगों के कल्याण के लिये कर्म करते हैं और हम लोग उन्हें प्रेरणा देते रहते हैं। हम स्वार्थी हैं, हम चाहते हैं, आप लोग हम जैसे बन जायें और आप चाहते हैं कि हम आप जैसे बन जायें। डॉक्टर्स की ड्रेस सफेद होती है और एड्वोकेट की पोशाक काली होती है। सफेद पोशाक दाग-धब्बे को छुटाती है और काली पोशाक उपगूहन व स्थितीकरण अंग का सूचक है। डॉ. के पास मरीज बालकवत् अपने रोग के निदान के लिये बिना कुछ छिपाये सबकुछ कह देता है। उसी तरह हमारे पास अपनी अंतरंग में चल रही हलचल को बिना किसी मात्सर्य के प्रगट कर देता है उसे लगता ही नहीं है कि वह जो कह रहा है वह गलत है। सहज ही कह जाता है। जैसे हमारे पास अपने बेटे को लेकर माँ आती है और कहती हे कि मेरा बेटा बिल्कुल पढ़ता नहीं है आप इसे पढ़ने के लिये अच्छा सा आशीर्वाद दें। बेटा भी कह देता है, महाराज जी मेरी माँ दिन-भर टी.वी. देखती रहती हैं। उसको यह कहते हुए मालुम नहीं होता कि माँ की शिकायत कर रहा है। उसी तरह मरीज भी डॉ. से सब कुछ कह देता है तभी तो डॉ. मरीज का सही तरीके से इलाज कर देता है। रोग भी धवल

वस्त्र पर दाग की तरह है जिसे ठीक करने के लिये जब तक डॉक्टर अपनी पूरी बात नहीं कह देता है तब तक वह अच्छा इलाज नहीं कर सकता है। वकील के पास कैसा ही अपराधी आ जाये वह उसको भगाता नहीं है। उसे बहुत धैर्य से सुनता है और उसके अपराध रूपी दोषों को धीरे-धीरे छुटाता है और स्वस्थ बनाता है। अपने-अपने तरीके से स्वस्थ करने के साधन हैं। जैसे कृष्ण ने सुदामा को आते ही गले लगा लिया, यह विचार नहीं किया कि उसके वस्त्र मैले-कुचैले हैं, धूल लगी है। इस तरह कृष्ण ने सहज ही अपनाया था वैसे ही हमें अपनाना चाहिये। अधिकारी वर्ग दोनों को ही यथावत बनाता है। नेता कौन होते हैं? जिन्हें जन सामान्य ही चुनकर सरकार में प्रवेश दिलाते हैं। संस्कृत में 'नेतृ' धातु ले जाने के अर्थ में आती है जिस धातु से नेता शब्द बनता है। नेता समाज को अच्छी दिशा की ओर ले जाते हैं और समाज का उद्धार करते हैं। मुनि लोग भी भव्य जीवों के कल्याण के लिये कार्य करते हैं। साधुलोग मोक्ष-मार्ग के नेता हैं। अपने कल्याण के साथ-साथ आप लोगों के उज्ज्वल भविष्य के लिये जिनवाणी का उपदेश देते हैं और तीर्थंकर तो मुनियों के भी नेता होते हैं। भगवान महावीर ने समवसरण सभा में कहा है कि 'अहिंसा' धर्म का मूल है।

हम महाव्रती हैं जिसमें अहिंसा प्रथम महाव्रत है इसका जितनी सूक्ष्मता से पालन करेंगे उतने ही हम धर्म की गहराई में उतरते चले जायेंगे, उतनी ही हमारी तपस्या में वृद्धि होती चली जायेगी। एक अहिंसा महाव्रत के पालने से शेष चार महाव्रतों (सत्य महाव्रत, अचौर्य महाव्रत, ब्रह्मचर्य महाव्रत और अपरिग्रह महाव्रत) का पालन सहजरूप से हो जाता है। गाय लाल है, गाय काली है, गाय सफेद, और गाय अनेक रंगों वाली है। गाय तो गाय है सभी परोपकारी हैं, और ये नाम इसकी पर्याय हैं। इसी तरह अहिंसा, दया, करुणा, अनुकम्पा आदि ये पर्यावाची कहलाते हैं। कवि तुलसी दास ने भी कहा है-

दया धर्म का मूल है, पापमूल अभिमान।
तुलसी दया न छाड़िये, जब लौं घट में प्राण॥

वर्तमान में भौतिक विज्ञान तरक्की कर रहा है। किस दृष्टि से प्रगति हो रही है? पंचन्द्रिय विषयों की वृद्धि के लिये वह साधन उपलब्ध करा रहा है। इन सबमें प्रधानतया हिंसा ही बढ़ रही है। देश में प्रतिदिन कितने ही हजारों मूक प्राणियों का आधुनिक तरीकों से वध हो रहा है। भगवान महावीर की अहिंसा का संदेश विदेशों में बढ़ रहा है लोग अब प्राकृत, संस्कृत भाषा का अध्ययन कर रहे हैं और भगवान महावीर की वाणी को समझने का प्रयास कर रहे हैं। सोलापुर (महाराष्ट्र) के व्यक्ति ने हमें बताया कि जर्मनी की एक लायब्रेरी की सूची में एक ग्रन्थ "गन्धहस्ती-महाभाष्य" है, उसका उन्होंने नाम वहाँ देखा जो ग्रन्थ आज हमारे यहाँ उपलब्ध नहीं है। इस ग्रन्थ की रचना आचार्य समन्तभद्र ने अठारह हजार श्लोक प्रमाण तत्त्वार्थसूत्र पर टीका रूप में की थी। लेकिन वह यहाँ उपलब्ध नहीं है। उस व्यक्ति ने वहाँ के अधिकारी से उस ग्रन्थ को देखने की जिज्ञासा व्यक्त की। उन अधिकारियों को यह मालूम हुआ कि यह व्यक्ति भारतीय है तो उन्होंने उस व्यक्ति से यह कह कर मना कर दिया कि यह नाम विषय सूची में तो है परन्तु वह ग्रन्थ अनुपलब्ध है। विचार करो कि एक लायब्रेरी में ऐसा हो सकता है, उन्होंने क्यों नहीं दिखाया? क्योंकि उसमें करणानुयोग का विस्तृत वर्णन होगा जिसके आधार से आज वे विज्ञान की दृष्टि से आगे पहुँच रहे हैं। जयपुर से एक व्यक्ति हमारे पास दर्शन के लिये आये थे वो हमें

बता रहे थे। आज के भौतिक वैज्ञानिकों ने उत्तर दिशा में एक कठोर वस्तु देखी है जो यहाँ से बहुत दूर है, गोल है और बहुत ऊँची है इसके लिये अभी खोज जारी है। हमारे जैन शास्त्रों में बहुत पहले से वर्णित है वह कठोर वस्तु सुमेरु पर्वत है जो उत्तर दिशा में इस जम्बूद्वीप के मध्य में स्थित है। चुम्बकीय सुई उत्तर की दिशा में क्यों स्थिर होती है? इसका कारण गुरुत्वाकर्षक सुमेरु पर्वत है। ऐसे ही हमें मालूम हुआ है कि वैज्ञानिकों ने एक साथ दो सूर्यों के फोटो लिये हैं। उनके लिये यह खोज का विषय हो सकता है पर जैन शास्त्रों में स्पष्ट रूप से पहले ही वर्णित है। हमें खुशी होती है कि आज के विज्ञान ने भी जैन धर्म को एक आदर्श रूप में स्वीकार किया है।

इस लोक में अनंत पुद्गल वर्गणायें ठसा-ठस भरी हुई हैं वे तेईस प्रकार की वर्गणाएं हैं। उनमें ग्राह्य वर्गणाएं पांच हैं, जैसे आहार वर्गणा, तैजस वर्गणा, भाषा वर्गणा, मनो वर्गणा और कार्मण वर्गणायें। जो कुछ भी इन्द्रियों से हम जान रहे हैं वह सब वर्गणाओं का समूह स्कन्ध रूप है। ये वर्गणाएँ पौद्गलिक हैं। पुदगल जो पूरन-गलन स्वभाव वाला है वह रूपी पदार्थ है हमें वही सब दिखाई देता है। जीव या अन्य द्रव्य हमें दिखाई नहीं देते हैं। फिर भी जीव इन पुद्गल-वर्गणाओं के अवलंबन से हमें शरीरादि रूप दिखाई देता है। स्थावर जीवों के पाँच भेद हैं जैसे पृथ्वीकायिक, जलकायिक, वायुकायिक, अग्निकायिक और वनस्पतिकायिक। इनके शरीर पुद्गल वर्गणाओं से निर्मित हैं। हमारे शरीर की रचना भी पुद्गल वर्गणाओं का स्कन्ध है। वनस्पति में तो जीव के आस्तित्त्व की सिद्धि जगदीश चन्द बसु ने की है। जैन दर्शन के अनुसार पाचों स्थावरों में जीव होता है। उदाहरण के लिये जब कहे कि अग्नि में जीव है तो उसे सिद्ध करने के लिये हम समझें। खदान में प्रवेश करने के पहले ऑक्सीजन की उपस्थिति का अनुमान लगाते हैं और वहीं तक हम जाते हैं उसके आगे कृत्रिम ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। उसको परखने के लिये जलती हुई लालटेन को छोड़ते हैं। नीचे जहाँ तक लालटेल जलती रहेगी वहीं तक ऑक्सीजन की उपस्थिति होती है। मतलब अग्नि को श्वासोच्छवास की आवश्यकता होती है। जिस तरह हम लोगों के लिये श्वासोच्छवास एक प्राण है उसी तरह अग्नि का भी श्वासोच्छवास एक प्राण है। इससे सिद्ध होता है कि अग्नि में जीव है। उसी तरह पृथ्वी में भी जीव है उसमें वृद्धि देखी जाती है। भगवान महावीर की वाणी में यह सब आया है और हम तक आचार्य परम्परा से उपलब्ध है। जैन शास्त्रों में लिखा है कि अग्नि कायिक जीवों की उत्कृष्ट आयु तीन दिन होती है उसके बाद फिर दूसरे जीव प्रवेश कर जाते हैं। पृथ्वीकायिक जीवों की आयु बीस हजार वर्ष व वनस्पति कायिक जीवों की आयु अधिकतम आयु दस हजार वर्ष होती है और वनस्पति कायिक जीवों की अधिकतम आयु बीस हजार वर्ष होती है। एक बूंद पानी में छत्तीस हजार चार सौ पचास त्रस कायिक जीव होते हैं यह विज्ञान की प्रयोगशाला से सिद्ध हुआ है। भगवान महावीर की वाणी से उद्धत शास्त्रों में एक बूंद जल में असंख्यात जैसे त्रसकायिक जीव होते हैं। इसलिये प्रत्येक जैनी जल को गाढ़े (मोटे दुहरे) छन्ने से छान कर सेवन करता है जिससे जीवों की हिंसा से बच सके। विचार करो भगवान महावीर की वाणी में अहिंसा को कितनी सूक्ष्मता से प्राथमिकता दी है। आज 90% लोग बीमार हो रहे हैं तो अशुद्ध खान-पान के प्रभाव से। डॉक्टर्स का दवाखाना तो अशुद्ध खान-पान से चल रहा है। रात्री भोजन से पाचन क्रिया बिगड़ जाती है और उसके प्रभाव से अनेक प्रकार के रोग बढ़ रहे हैं। जैनों के तो संस्कार हैं कि ये सूर्यप्रकाश में ही भोजन करते हैं। अहिंसा व्रती गृहस्थ सूर्योदय के 48 मिनिट बाद और सूर्यास्त

के 48 मिनिट पहले भोजन करते हैं।

भगवान महावीर की अनेकान्तात्मक वाणी भव्य जीवों के कल्याण के लिये उद्घाटित हुई। जैन धर्म अनेक दृष्टि से वस्तु के धर्म को कहता है। यह धर्म मानव पर्याय के कल्याण के लिये है जो शाश्वत सुख में पहुँचाता है। एक वस्तु-या पदार्थ में अनेक धर्म होते हैं। उदाहरण के लिये भगवान राम जिन्होंने मुक्ति रूपी शाश्वत सुख पाया है। वे राम; सीता के पति थे, लक्ष्मण के ज्येष्ठ भ्राता थे, दशरथ के पुत्र थे, लवकुश के पिता थे और राजा जनक के लिये वे दमाद थे। यदि किसी बिल्डिंग के लिये कथन करें तो वह दीवारों से निर्मित है, दरवाजे-खिड़कियों से बनी है, यह सीमेन्ट-गिट्टी से बनी है, यह पत्थरों से बनी है। सही मायने में तो बिल्डिंग इन सब वस्तुओं के आधार से बनी है यह तो आपलोग जानते हैं। उसी तरह हम हाथी के लिये कहें कि चार अंधे थे, उन्होंने हाथी को जाना नहीं था, जिज्ञासावश हाथी एक स्थान पर मिल गया सबने अपने-अपने तरीके से हाथी को जाना। एक ने हाथी को पीठ पर हाथ लगाया तो उसने कहा कि हाथी दीवाल के समान है, दूसरे ने हाथी के कानों को छुआ तो उसने कहा, हाथी सूपे के समान है, तीसरे ने हाथी के पैरों को छूकर बोला, यह तो खंबे के समान है चौथे ने पूँछ को छुआ तो वह बोला यह तो झाड़ू के समान है जब चारों एक साथ बैठे तो आपस में अपना-अपना अभिप्राय रखते हुए विवाद करने लगे। थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति ने देखा ये विवाद कर रहे हैं तो उसका कारण पूछा तो सभी अपने-अपने तरीके से हाथी का स्वरूप बताने लगे। तो इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि अरे विवाद की बात नहीं है अपनी-अपनी अपेक्षा से सभी सही हैं क्योंकि हाथी में ये सभी अवस्थाएँ हैं। ऐसे ही जैन धर्म है वह वस्तु के अनेक धर्मों का कथन करता है जो उस वस्तु में विद्यमान हैं।

भगवान महावीर ने चार प्रकार की हिंसा बतायी है, जैसे संकल्पी हिंसा, विरोधी हिंसा, आरंभी हिंसा और औद्योगिक हिंसा। इन चारों हिंसाओं में जो जिस का त्यागी है वह उसका पालन करता है। मुनि महाराज तो अहिंसा महाव्रती हैं उनका तो चारों प्रकार की हिंसा का त्याग है। लेकिन अवस्था अनुरूप सब इसका पालन करते हैं। सामान्य से जो सैनिक बार्डर पर तैनात है उनको तो विदेशी आक्रमणकारियों की हिंसा करनी पड़ती है क्योंकि पूरे देश की सुरक्षा का प्रश्न है। यह विरोधी हिंसा की श्रेणी में आता है। उसी तरह राम ने रावण से युद्ध किया वह एक आत्मा की शील की रक्षा के लिये था। राम तो उसी भव से मोक्ष गये थे वे अहिंसक थे।

हम से लोग पूछते हैं, महाराज आपने तो घर छोड़ दिया है आप तो पाप करते नहीं हैं तो आप इतना त्याग क्यों करते हो? हाँ हम अनादिकाल से संसार में हैं उन कर्मों को शीघ्र खपाना है इसलिये हमें इतनी त्याग-तपस्या आवश्यक है। आप लोग भी रोज पाप कर्म करते हैं उन कर्मों की निर्जरा के लिये देव-पूजा-गुरुपास्ति आदि करते हो रोज के रोज कर्ज चुकाना पड़ता है तभी आप लोग आगे बढ़ पाओगे, नहीं तो और संसार के गर्त में फंसते चले जाओगे। प्रतिदिन आप लोग मंदिर में आकर आलोचना पाठ पढ़ते हो ताकि हमारे पाप कर्म हल्के हो जायें।

'सुनिये जिन अरज हमारी हम दोष किये अतिभारी।' 'भगवन् हमने अवगुण बहुत किये।' हम ने जितने भी पाप किये वे तीनों आँखों से नहीं बच सकते एक स्वयं की, दूसरी कर्मों की आँखें और तीसरी भगवान की आँखें। इसीलिये तो भगवान के सामने सब कुछ साफ-साफ कह देते हो। भगवान तो दर्पण के समान है,

तुम्हें दाग छुटाना है तो तुम्हें ही पुरुषार्थ करना होगा।

हम लोग पिच्छी क्यों रखते हैं, यह संयम का सूचक है, वस्तु उठाते, रखते समय जीव रक्षा का साधन है, यह इतनी कोमल होती है कि किसी की आँख में भी लग जाये तो भी कुछ नहीं होता। ये पंख दिवाली के समय मयूर स्वयं छोड़ देते हैं और उन पंखों से पिच्छी तैयार होती है। इसी तरह साधु लोग अहिंसा पालन हेतु दिन में चार हाथ भूमि देखकर चलते हैं जिसे ईर्या समिति कहते हैं। आप लोगों को भी जीव हिंसा से बचने देख कर चलना चाहिये। अहिंसा की दृष्टि से आटे की मर्यादा तो ठंडी, गर्मी, वर्षाकाल में 7-5-3 दिन की होती है। वैसे ही गर्म जल का उपयोग समय की मर्यादा से ही करते हैं। एक शहा डॉक्टर जो आलंद कर्नाटक के थे वे स्वयं गर्म किया हुआ पानी पीते थे उन्होंने बताया था कि अपने शरीर के तापमान के अनुरूप गरम जल का उपयोग करने से पाचन क्रिया आसानी से होती है। हम लोग यह सब धर्म की दृष्टि से करते हैं। लेकिन आप लोग शरीर के आरोग्य की दृष्टि रखते हो। हम व्रतों की सुरक्षा के लिये करते हैं। जैन धर्म इतना सूक्ष्म है जितनी गहराई में चिन्तन करोगे उतनी ही आत्म-विशुद्धि बढ़ेगी। जार्ज बर्नार्ड सॉ ने कहा था कि मेरा अगला जन्म हो तो जैन धर्म मिले। ऐसी भावना उन्होंने व्यक्त की थी। ऐसा कहा जाता है कि उनके बंगले के परिसर में बहुत सुन्दर बगीचे थे और उनमें बहुत सुन्दर-सुन्दर फूल थे। लेकिन टेबल पर जहाँ पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करते थे उस पर एक भी फूल नहीं था। किसी व्यक्ति ने पूछा, सर! आपके बगीचे में अनेक प्रकार सुन्दर फूल खिले हैं लेकिन आपकी टेबल पर एक भी नहीं है ऐसा क्यों है? उन्होंने उत्तर दिया जैसे मानव का सिर शरीर पर शोभित होता है वैसे ही फूलों की शोभा वृक्ष लताओं पर होती है। महाराष्ट्र के एक व्यक्ति को एक बीमारी ने घेर लिया, बहुत परेशान था। चेन्नई गया और वहाँ इलाज करवाया, वहाँ कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो गया तब कहने लगा कि डॉक्टर तो मरीज के लिये भगवान होते हैं, डॉ. कह दे कि माँस खाना बन्द कर दो यदि तुम अपना जीवन बचाना चाहते हो तो! वह रोगी तुरंत माँस सेवन छोड़ देता है क्योंकि उसको मरण से भय होता है। पूना में एक (B.W.C.) कंपनी है जो उजागर/सर्च करके यह बतलाती है कि कौन वस्तु हिंसक है या अहिंसक ऐसे ज्ञान की आज बड़ी जरूरत है। एक लेपटाप पर किसी ने दिखाया था कि एक विदेशी फेक्टरी में एक दिन में एक पट्टे पर जाते हुए मशीन के अन्दर पाँच लाख चूजे(मुर्गी के बच्चे) पिसते हैं और कुछ मीठा आदि मिलाकर उसकी राड जैसी बनाकर उसको टुकड़ों में विभाजित कर अच्छे से पेकिंग कर बाजार में चॉकलेट के रूप से लाया जाता है। विचार करो प्रतिदिन कितनी हिंसा हो रही है। क्या ऐसे कार्यों पर रोक नहीं लगनी चाहिये? या अपनी नई पीढ़ी को इन चीजों से दूर अवश्य रखना चाहिये। ऐसे ही प्रचार हो रहा है अण्डा शाकाहारी है यह धारणा गलत है। एक अण्डे का जो बाहर सफेद कवच होता है उसमें पन्द्रह हजार छिद्र होते हैं जैसे हमारे शरीर में रोम के छिद्र हैं। उन छिद्रों के द्वारा उसमें पनप रहा जीव श्वास लेता है। डाक्टर्स को इन विषयों पर विचार करना चाहिये और वर्तमान में चल रही हिंसा को रोकना चाहिये। हमने सन् 2008 में ग्वालियर में भी डॉक्टर्स की संगोष्ठी करवाई थी जिसमें चार सौ डाक्टर्स बुलवाये गये थे और अहिंसा प्रचार की शपथ दिलाई थी।

एक देश में राजा की आज्ञा से माँसाहार की बन्दी थी। किसी समय एक प्रदेश के एक मंत्री ने राजा के पास विनती करते हुये कहा, राजन हमारे प्रदेश में धान्य की बहुत कमी है अत: लोगों के जीवन के लिये

मांसाहार करने की छूट दी जाये। यह सुनकर राजा चिंतित हुआ क्या निर्णय दिया जाये। वहीं राजकुमार भी उपस्थित थे तो उन्होंने राजा से निवेदन करते हुये कहा कि इस पर निर्णय लेने के लिये कुछ समय दिया जाये और रात्रि में राजकुमार एक-एक करके सभी मंत्रियों के कमरे में गया और कहा कि राजा का स्वास्थ्य ठीक नहीं है इसलिये आपका एक तोला माँस चाहिये, मंत्रियों ने लाखों की सम्पत्ति देने पर भी अपने शरीर का माँस देने के लिये मना कर दिया। इस तरह सभी मंत्रियों और राजा के बीच दूसरे दिन जब सभा लगी तब मंत्रियों ने देखा कि राजा तो स्वस्थ हैं, फिर माँस की जरूरत क्यों हुई। तब राजकुमार ने रहस्य खोलते हुए कहा कि आप लोग राजा के लिये एक तोला माँस नहीं दे सकते हैं। फिर बेकसूर तिर्यंच मूक प्राणियों की हत्या करके उनका माँस भक्षण किया जाय, ऐसी छूट कैसे दी जाये? इस तरह उस प्रदेश के लिये माँस की छूट नहीं प्रदान की गई।

तंबाकू खाने वाले व्यक्ति के शरीर में निकोटिन का प्रभाव पूरे शरीर में हो जाता है। एक बार की घटना है, एक व्यक्ति ने दो-तीन माह के बच्चे को कुछ देर अपने पास अपने हाथों पर रखा, थोड़ी देर बाद बच्चे का शरीर नीला हो गया। तब डाक्टर के पास दौड़े उन्होंने कहा जिसने इसे कुछ देर पकड़ा है वह तम्बाकू खाता है? ऐसा लगता है। ऐसा सुनते ही तम्बाकू के दुष्प्रभाव को जानकर तम्बाकू खानेवाले ने तम्बाकू छोड़ दी।

राम जब अयोध्या वापिस आ गये तब हनुमान ने राम से बोला अब मैं अपने देश वापिस जा रहा हूँ। जाते समय आप मुझे मंगलमय संदेश दें। तब रामचन्द्र जी कहते हैं तुमने मुझ पर जो उपकार किया है वह उपकार मुझे तुम्हारे पर नहीं करना पड़े बस; देखो! कितनी गहरी बात कही कि मेरे साथ जो घटना घटी ऐसी घटना तुम्हारे साथ न हो। आज के लोग यह विचार करते हैं कि जल्दी से जल्दी हम अपना कर्जा चुका दें। अर्थात् किसी की दुर्घटना पर की गई सेवा से यह सोचना गलत है कि हे भगवान सामने वाले की दुर्घटना जल्दी हो जिससे उसकी सेवा कर हम कर्ज चुका दें। लेकिन किसी को भी कष्ट न हो ऐसे भाव रखना ही अहिंसा है।

हनुमान जब पहली बार सीता जी से लंका में मिलने राम का संदेश लेकर गये थे। तो उन्होंने सीता जी को राम की दी हुई ''मुद्रा'' दिखाते हुए कहा कि मैं रामचन्द्र जी का कुशल क्षेम लेकर आया हूँ और शीघ्र आपको वापिस लेकर जायेंगे। आपके विरह के दस दिन बीत गये हैं आपने अन्न-जल ग्रहण नहीं किया है। आज आप यह फलाहार ग्रहण करें सीता ने कहा ऐसे कैसे कह सकते हो कि मुद्रा राम ने भेजी है। कुछ और पहचान बतायें। तब हनुमान ने कहा-कि

न मांसं राघवो मुङ्क्ते, न चैव मधु सेवते।
वन्यं सुविहितं नित्यं, भक्तमश्नाति केवलं॥

रामचन्द्र जी कभी माँस भक्षण नहीं करते न ही मधु का सेवन करते हैं वे तो वन में पैदल विचरण करते हैं और शाकाहार करते हैं। तब सीता जी को विश्वास हुआ और अपने संकल्प को शिथिलकर हनुमान के द्वारा लाये गये बहुत प्रकार के फलों का आहार किया। निःस्वार्थी सच्चे डॉक्टर तो वहीं होते हैं जो ऐसा विचार करें कि मेरे क्लीनिक पर कोई रोगी नहीं आये। हाँ अगर कर्मों से सताया रोगी आवेगा तो उपचार करना मेरा कर्त्तव्य समझूँगा। गुरु की बात को बुरा नहीं मानना चाहिये। शिष्य और शीशी में डाट लगानी चाहिये। शिष्य को डाँट नहीं लगायें तो बिगड़ जायेगा और शीशी को डाँट नहीं लगायें तो दवाई 'बगर/गिर' जायेगी। गुरु वह होते हैं जो

शिष्य के धार्मिक जीवन की शुरुआत कर देते हैं। शिष्य अगर बाँस है तो उस बाँस को बांसुरी बना देते हैं।

महाभारत के सोलहवें अध्याय में कहा है-

मद्यमाँसाशनं रात्री भोजनं कंद भक्षणं।
ये कुर्वन्ति वृथा तेषां तीर्थयात्रा जपस्तपः॥

यदि शराब, माँस, भक्षण, रात्रि भोजन, कंदमूल सेवन आदि जो करते हैं तो उनकी तीर्थ यात्रा जप तप आदि क्रिया करना व्यर्थ है। अंत में हमारा यही संदेश है कि माँसाहार निरशन हो वकीलों को चाहिये अपराधियों का साथ नहीं दें। अन्याय का समर्थन कदापि नहीं करना चाहिये।

अन्यायोपार्जितं वित्तं, दस वर्षे हि तिष्ठति।
प्राप्तेत्वेकादशे वर्षे, समूलंतद् विनश्यति॥

अन्याय से उपार्जित धन अधिक से अधिक दस वर्ष तक रह सकता है फिर मूल के साथ चला जाता है। अन्यायी की संतानें लूली-लंगड़ी आदि अपंग भी पैदा होती हैं।

अंत में यही संदेश देता हूँ भगवान महावीर की अहिंसा वर्तमान में भी पूर्ण उपयोगी है वही आत्मा के कल्याण का विशिष्ट ज्ञान है इसलिए विज्ञान है। इन समीचीन सिद्धांतों को अपनाकर आज भी जीव अपना कल्याण कर सकते हैं। आप लोग समाज के बुद्धिजीवी हैं, भगवान महावीर के सिद्धांतों को जीवन में उतारकर अपने कल्याण के साथ समाज का भी कल्याण कर सकते हैं।

अंत में गुरुवर की चार लाइनें बोलता हूँ -

ज्ञान ही दुःख का मूल है, ज्ञान ही भव का कूल।
राग सहित प्रतिकूल है, राग रहित अनुकूल॥
चुन-चुन इनमें उचित को, मत चुन अनुचित भूल।
सब शास्त्रों का सार है, समता बिन सब धूल॥

जैन दर्शन अपने आप में पूर्ण विज्ञान है

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

आचार्यश्री ने कहा कि जैन दर्शन अपने आप में एक पूर्ण विज्ञान है। जैन दर्शन के ही आधार से कुछ वैज्ञानिक लोग एक सूर्य की जगह दो या कई सूर्य व पृथ्वियाँ (भूमियाँ) मानने को तैयार हुये हैं। अन्य ग्रहों पर भी जीवन मान रहें हैं, उड़न तश्तरी तक न पहुँच पाने से कोई महान बुद्धिजीवी शक्तिमान आत्माओं (विद्याधरों) की कल्पना कर रहे हैं, उत्तर दिशा में बहुत दूर, गोल, कठोर और बहुत ऊँची वस्तु को उपग्रह आदिक से देखकर मानो सुमेरु पर्वत की सिद्धि की जा रही है और परमाणु की सिद्धि कहें या वनस्पति आदिक में जीव की खोज इन सभी की सिद्धि के लिए जैन शास्त्रों में वर्णित विज्ञान के बिना वर्तमान विज्ञान का काम नहीं चल सकता। इसी वजह से जर्मनी आदि देशों में हमारे देश की संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का अभ्यास कर हमारे देश से ले जाये गये कई शास्त्रों का अध्ययन किया जाता है।

साभार : आर्जव-वाणी

अतिशय क्षेत्र मढ़ियाजी

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज

1. पिसनहारी की मढ़ियाजी का, अतिशय लगता न्यारा है।
बने जहाँ इक छोटा मंदिर, लेकिन बना विशाला है।।
कर से चला-चला चक्की वा, इक-इक पैसा जोड़ा था।
बुढ़िया ने मढ़िया बनवायी, धन दे जो भी थोड़ा था।।
2. बने अनेकों फिर जिन मंदिर, चौबीसी वा बाहुबली।
पर्वत शोभा पाता जिससे, डग-डग शोभा जहाँ खिली।।
बना तलहटी महावीर का, मन्दिर शोभे मानस्तम्भ।
नन्दीश्वर अतिशय रचवाया, मानो शोभे कीर्तिस्तम्भ।।
3. गुरुवर विद्यासागरजी से, मार्ग मिला शुभ फल पाया।
नंदीश्वर की रचना हुई व, पंच कल्याणक करवाया।।
विद्यासागर गुरुवर की शुभ, प्रभावना ये नन्दीश्वर।
बड़ा बना जो प्रथम रूप से, बैठे बावन जिन ईश्वर।।
4. प्राण प्रतिष्ठा जिनवर की वा, दीक्षाएँ दीं ज्ञानमयी।
आगम ग्रन्थों के वाचन में, दी देशना सारमयी।।
गुरुकुल आश्रम विद्यालय भी, समीचीन शुभ बनवाये।
गुरु शरणों आ-आकर भवि, निर्देशन गुरु के पाये।।
5. तिलवारा में मुनिदीक्षा ले, भव्यों को गुरु संघ मिला।
गौ-रक्षा-सह प्रतिभा स्थल, बना ज्ञान का रंग खिला।।
नगर जबलपुर संस्कारों की, धानी जो कहलाती है।
बड़े-बड़े-जिनगृह से अपनी, गरिमा को बतलाती है।।
6. निकटांचल में अतिशयकारी, क्षेत्र पनागर शान्ति प्रभो।
भेड़ा घाट व बर्गी बांध से, बिखरी कीर्ति देश अहो।।
जैनों का समुदाय व्रती का, कहें खजाना मम गुरुराज।
देश-देश में मढ़िया की जय, होगी नित ही हित के काज।।

दोहा - महावीर को कर नमन-नत हो बारम्बार।
'आर्जवता' से शिव मिले-निज हो भव से पार।।

जिनशासन की महिमा (जिन शासनाष्टक)

संपूर्ण विश्व को निर्दोष परमात्मा के हित, मित, प्रिय संदेश

अखिल विश्व में सर्वोत्तम, इक जिनशासन[1] मंगलमय है
सभी प्राणियों को हितकारी, मार्ग प्रदर्शक अनुपम है।
दयाधर्म औ[2] अनेकान्तमय पावन है जिनशासन
साम्यभाव धारण कर प्राणी करता निज पर शासन
जैसे बीज कृषक बोते हैं, अंकुर होते वैसे
कर्म करें जैसे जो प्राणी, फल पाते हैं वैसे
विश्व हितैषी मोक्ष मार्ग पा भाग्य सदा बदला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है। (1)
हर अनर्थ का कारण जनता समझी अभी नहीं है
हिंसा से बढ़कर दुनिया में कोई पाप नहीं है
महाअधम है पापी है, मानवता अगर नहीं है
दानव जैसा करे आचरण वह इंसान नहीं है।
पशुओं को पीड़ा दे, जग में कब नर सुखी हुआ है?
जिसने पर को खोदी खाई, उसको खुदा कुआँ है
अपने जैसा सबका सुख दुख समझो तभी भला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है। (2)
तजे दुराग्रह औ[2] दुर्गुण, शांति वहीं पाता है
सदा उपासक रहे सत्य का, विजय वही पाता है
अंध भक्ति से मुक्त हुआ नर, नव जीवन पाता है
संप्रदाय व पंथ मोह तज, विश्व बंधुता भाता है
सत्य पंथ का अन्वेषक ही मुक्ति मार्ग को पाता है
वही संत औ[2] परमात्मा बन, जीवन सफल बनाता है।
नहीं धर्म की परख यदि, तो होता नहीं भला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है। (3)
वीतराग, सर्वज्ञ, हितैषी बन जो मुक्त हुए हैं
पहले वे नर हुए, बाद में ही भगवान हुए हैं।
दानवता का त्याग करे, सन्मार्ग वही नर पावे
राग-द्वेष, रिपु को जो जीते महावीर कहलावे।
सुखदुख, जीवन मरण, सभी कर्मों की अमिट निशानी है
इसीलिये चारों गतियों में भटक रहा हर प्राणी है।
वह स्वतंत्र जिसने असत्य का ढाया दुष्ट किला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है। (4)
चेतन तन से पृथक वस्तु है, अटल सत्य इतना है
यह अनंत संसार किसी के द्वारा नहीं बना है
और न कोई यहाँ किसी को सुख दुख का दाता है
अपना किया उसे मिलता, वह अपना निर्माता है।
जीव अजीव अनादि न इनका उत्पादन होता है
इनकी पर्यायों का केवल परिवर्तन होता है।
है प्रत्यक्ष यह अनुभव सबका, ये ही ज्ञान तुला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है। (5)
शिक्षित और विवेकी जन जो जिनशासन परिचय पाते
दयामयी जिन धर्म शरण पा भव सागर से तर जाते
नित्य वस्तु भी अनित्य होती, दृष्टिकोण पा न्यारा
हर विवाद का हल हो सकता, स्याद्वाद के द्वारा।
अनेकांत सिद्धांत न्याय से हम सबके पट खोलें
जहाँ सत्य हो, जहाँ अहिंसा, सब उसकी जय बोलें।
मोक्षमार्ग पर चलने से ही सबका सदा भला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है। (6)
वीतराग विज्ञान सहित जो मार्ग संत दिखलाते हैं
गुण ग्राहक व भद्र, भव्यजन उसे सदा अपनाते हैं।
धर्म अहिंसा के प्रभाव से मानव भय बिन जीता है
नहीं सत्य को समझ सका तो जन्म निरर्थक बीता है
आत्मज्ञान जग में दुलर्भ है, उस बिन सब कुछ रीता है
सत्य अहिंसा जिस जीवन में, उसकी वाणी गीता है।
रखो मित्रता हर प्राणी से, होगा तभी भला है
दयामयी जिनधर्म द्वार यह सबके लिए खुला है। (7)
नश्वर सुख पाने हर प्राणी, करते यत्न अनेक
जड़ चेतन के भेद ज्ञान बिन, जगता नहीं विवेक
'सप्त व्यसन'[3] के त्याग से मिटते कष्ट अनंत
जिन शासन शरण ले, श्रमण बने भगवंत
जिन शासन की शासन महिमा बड़ी, रहे सदा जयवंत
दयामयी जिन धर्म द्वार यह कभी न होता बंद
जिनशासन महिमा समझ हो अधर्म से दूर
समीचीन जिनधर्म दे, शाश्वत सुख भरपूर(8)
'विद्या सिंधु'[4] असीम है, 'विद्या सिंधु'[5] महान है
'विद्या सिंधु'[6] से मिला, जिनशासन का ज्ञान

(1) जिन शासन = शाश्वत समीचीन धर्म, (2) औ = और, (3) जुआ खेलना, मांसाहार, शराब पीना, वेश्या सेवन, शिकार, चोरी, परस्त्री संसर्ग ये सप्त व्यसन (बुराइयाँ) वर्तमान जीवन को और भविष्य को अंधकारमय करते हैं। (4) केवल ज्ञान, (5) सम्यग्ज्ञान, (6) श्रमण संत

शब्द/भाव संयोजन: अशोक जैन ग्रंथालय प्रबंधक (लार्डगंज जिनालय) फर्म मणिरत्नम, घमंडी चौक, मो.न. 95843 86459
ज्ञानप्रभा सामाजिक एवं शैक्षणिक उत्थान समिति, प्रभावना स्थली, जबलपुर (म.प्र.) मो.नं. 78038 64526

पटाखा त्यागो-जीवन शिल्प का अभियान

क्या कभी आपने सोचा है?

★ पटाखों से हमें आर्थिक नुकसान के साथ-साथ शारीरिक हानि भी पहुँचती है।

★ पटाखों की धमक से गर्भवती स्त्री को अनंत दु:ख होता है।

★ पटाखों की धमक से बेजुबाँ पशु-पक्षी पीड़ित भयभीत होते हैं।

★ पटाखों की धमक से छोटे-छोटे जीव-जन्तु मौत के घाट उतर जाते हैं।

★ पटाखों के कारण प्रतिवर्ष कई अग्निकाण्ड होते हैं व लाखों करोड़ों रुपयों का नुकसान होता है।

★ पटाखों के निर्माण में कई मासूम भोले बच्चे अपनी जीवन लीला समाप्त कर हमारे लिए पटाखे तैयार करते हैं।

आप पटाखों का त्याग करते हैं तो पायेंगे

★ स्वच्छ-सुन्दर पर्यावरण। ★ स्वच्छ-सुन्दर गली-मोहल्ला ग्राम नगर।

★ रुपयों के व्यर्थ अपव्यय से बचाव।

★ रासायनिक जहरीली गैसों व धुएं प्रदूषण से बचाव।

★ डराने एवं सहमा देने वाले शोर-धमाकों से मुक्ति। ★ असंख्य सूक्ष्म जीवों को जीवन-दान व पुण्यार्जन।

★ हाथ-पैर एवं त्वचा आदि शारीरिक हानियों से बचाव।

★ व्यर्थ की हानि अग्निकांड व दुर्घटनाओं से बचाव।

आप स्वयं चिंतन करें

★ क्या पटाखे फोड़ना हमारे लिए जरूरी है?

★ क्या पटाखे फोड़ने से ही दीपावली मनाना संभव है?

★ क्या बिना पटाखों के दीपावली नहीं मनाई जा सकती?

★ क्या पटाखे के जरिये हम अपने रुपयों में आग नहीं लगा रहे हैं?

★ क्या पटाखे फोड़कर हम पर्यावरण में प्रदूषण नहीं फैला रहे?

★ क्या पटोखे फोड़ लेने से ही दीपावली की खुशियाँ मिलना संभव है?

★ क्या पटाखे फोड़ने से (आतिशबाजी) से रुपयों का अपव्यय नहीं है?

जरा सोचें, चिंतन करें, विचार करें और इस दीपावली पर पटाखों का जरूर त्याग करें। जरा चिंतन करें। करोड़ों सूक्ष्म जीवों ने हमारा और आपका क्या बिगाड़ा है? कुछ नहीं ना, तो हम पटाखे छोड़ के उन सूक्ष्म जीवों को क्यों मारें और क्यों लाखों भवों के बैर का बंध करें? तो आइए आज से ही प्रण लें कि हम पटाखे बिलकुल ही नहीं जलायेंगे और दीपावली आने से पहले करोड़ों जीवों को अभय दान देंगे।

इस मुहिम में आप सभी का साथ और सहयोग जरूरी है।

संकलन-भारतीय जैन यूनिटी ग्रुप

भाव विज्ञान का अंक अब वेबसाइट http://www.aarjavsagarvigyan.com पर भी ओनलाइन उपलब्ध है।

संयम स्वर्ण चातुर्मास रामटेक

मंदिर तो बहुत बन रहे हैं, और बनते रहेंगे, लेकिन हम अब सरस्वती मंदिर की ओर आगे बढ़ रहे हैं। आचार्यश्री ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर प्रहार करते हुये कहा कि आजकल जो शिक्षण दिया जा रहा है, वह किसी काम का नहीं है, पढ़े लिखे होने के उपरांत भी वह अपने जीवन को उन्नत नहीं बना पाते। उपरोक्त उद्‌गार संत शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने रामटेक महाराष्ट्र में चातुर्मास कलश स्थापना के दौरान अपने आशीष वचन में कहे। उन्होंने कहा कि वर्तमान में पढ़े-लिखे होकर के भी लाखों की संख्या में बेरोजगारी की ओर नौजवान बढ़ रहे हैं। पढ़ लिखने के पश्चात् भी प्रबंधन सही नहीं होने से श्रम का सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। पहले के लोग अपने बच्चों को दायित्व सिखाते थे, लेकिन वर्तमान शिक्षा प्रणाली में दायित्व का अभाव है, आचार्यश्री ने कहा कि अच्छे संस्कारों के लिये अपने धन का सदुपयोग करना आपका कर्तव्य है, यदि व्यवस्थित कार्य करोगे तो आपके यहाँ दान दातारों की कमी नहीं है, जब तक कार्य पूरा नहीं होता तब तक भरोसा नहीं होता इसलिये जिन लोगों ने आज बोलियाँ ली हैं वह 11 माह में इस ओर ध्यान दें, उन्होंने कहा कि जीवित धन और जीवित चेतना की ओर हमारी दृष्टि है। जबलपुर हो या रामटेक या चंद्रगिरि, प्रतिभा स्थली तो हमारी सभी की एक ही हैं, बच्चे संस्कारित हों यही आशीर्वाद हमारा प्रतिभा स्थली की ओर है। यहाँ पर ऐसी नींव और परंपरा शुरु हो रही है, जो वर्षों-बरस तक चलती रहे। उन्होंने कहा कि चाहे चंद्रगिरी हो या जबलपुर या रामटेक प्रतिभा मंडल तो एक ही होता है, इसमें हजारों बहनें प्रवेश पा जाएंगी। उन्होंने कहा विशेष दक्षता प्राप्त आदर्शमति माताजी और बहनों सहित जैन कॉलोनी के लोग प्रबंध कर रहे हैं। इसमें मेरा कुछ भी नहीं है, गुरु महाराजजी का कहना था कि संघ को गुरुकुल बना देना, सो हम तो उनके उन आदेशों का ही पालन कर रहे हैं। गुरुकुल की उस परंपरा की ओर हम जा रहे हैं। आचार्यश्री ने वर्तमान में सरकार द्वारा लागू जीएसटी के बारे में बताते हुए कहा कि यहाँ पर जी एस टी से घबराने की जरूरत नहीं है, हमारे यहाँ की जीएसटी अलग है, जी मतलब गोम्मटसार, एस मतलब समयसार एवं टी मतलब तत्त्वार्थसूत्र। इन तीनों को जो अपने ज्ञान में उतार लेगा उसका संपूर्ण कल्याण हो जाएगा। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री अमित जी पड़रिया, जबलपुर ने किया। इस अवसर पर लाखों की संख्या में विभिन्न नगरों से आए भक्तजन उपस्थित थे, वहीं जिनवाणी चैनल के माध्यम से लाखों भक्तों ने इसे लाईव देखा।

सानन्द सम्पन्न हुई वर्षायोग की स्थापना

पुरवा-जबलपुर- जीव दया के लिये होता है चातुर्मास; साधुओं की आत्म साधना के साथ-साथ श्रावकों को धर्मोपदेश दिया जाता है शास्त्रज्ञान, ऐसा परम् पूज्य आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित धर्म प्रभावक आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ने यह बात वर्षायोग कलश स्थापना समारोह पर श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर, पुरवा नगर, जबलपुर के किड्स कैम्प जैन स्कूल के मैदान में बने पाण्डाल में जनसमूह के बीच कही। आचार्यश्री ने प्रवचन के दौरान बताया कि चार महीने के वर्षाकाल के अंतर्गत जीवों की उत्पत्ति अधिक होने के कारण साधु-संत जीव-दया के भाव से एक स्थान पर रहकर अपनी आत्म साधना करते हैं और

श्रावकों को मोक्ष मार्ग बतलाते हैं। कलश स्थापना के इस समारोह में आचार्यश्री के दर्शन हेतु दूर-दूर से दिल्ली, सूरत, अहमदाबाद, मद्रास, बैंगलोर, भोपाल, ग्वालियर, जयपुर, इंदौर, सागर एवं दमोह आदि से भी भक्त पधारे, जिन्होंने गुरुचित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस वर्षायोग में श्री दि. जैन वर्णी गुरुकुल के अधिष्ठाता ब्र. जिनेश शास्त्री एवं ब्र. नरेश जैन द्वारा संगीत भजनों के साथ कलशों की बोलियाँ एवं मंत्र संस्कार विधि सम्पन्न की गई जिसमें श्री अनिल बड़कुल, श्री रवि जैन, श्री जय कुमार जैन, श्री मुन्ना जैन, श्री गोलू जैन (जय मंगल) आदि कई श्रावकों ने कलश लेकर पुण्य अर्जित किया।

प्रात:काल में गुरु पूर्णिमा पर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की पूजन ब्र. अन्नू भैया एवं भोपाल से आये संचालक डॉ. श्री नरेन्द्र जैन के निर्देशन में हुई एवं आचार्यश्री आर्जवसागरजी के गुरु पूर्णिमा पर विशेष प्रवचन सम्पन्न हुए। प्रवचन के पूर्व आचार्यश्री का पाद प्रक्षालन एवं संघस्थ साधुओं को शास्त्र अर्पण भी श्रावकों द्वारा किये गये।

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के संघ में मुनि श्री 108 नमितसागरजी महाराज, मुनिश्री 108 भाग्यसागरजी महाराज, मुनिश्री 108 महत्सागरजी महाराज और आर्यिकाश्री 105 प्रतिभामति माताजी, आर्यिकाश्री 105 राजितमति माताजी तथा ऐलकश्री 105 भगवत्सागरजी महाराज विराजमान थे।

दूसरे दिन 10 जुलाई 2017 को प्रात: वीर शासन जयंती पर्व उत्साह सहित मनाया गया। सम्यक् ध्यान शतक इस विषय पर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 8:30 बजे किड्स कैम्प (जैन) स्कूल प्रांगण में होंगे। चातुर्मास व्यवस्था का कार्यभार संभालने की जिम्मेदारी चातुर्मास कमेटी के अध्यक्ष श्री विजय कुमार जैन, श्री आर.के. जैन, श्री संजय जी जैन (H.H.), श्री सुशील कुमार जैन आदि पदाधिकारियों ने प्राप्त की तथा सकल दि. जैन समाज, पुरवा के साथ श्रीफल भेंटकर आचार्य संघ से वर्षायोग की सानंद सम्पन्नता हेतु आशीर्वाद प्राप्त किया। जबलपुर नगर की विभिन्न कॉलोनी एवं उपनगरों से पधारे एवं पंचायत कमेटी के लोगों ने भी आचार्य संघ के चरणों में श्रीफल अर्पित कर आशीष प्राप्त किया।

बाहर से आये सभी अतिथियों को शॉल, श्रीफल व गुरुचित्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में कमेटी द्वारा आभार प्रदर्शन मंगलभावना पूर्वक सम्पन्न हुआ।

जबलपुर पुरवा का भाग्य जागा

संस्कारधानी जबलपुर नगर के पुरवा वासियों के पुण्य से उन्हें आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ चातुर्मास का योग मिला। जुलाई 1 से 9 तारीख तक आचार्यश्री के ससंघ सान्निध्य में अष्टाह्निका पर्व पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल का आयोजन किया गया। इसके पुण्यार्जक एवं सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य आचार्यश्री के पूर्वावस्था के बुआ के बेटे श्री रवि भैया को प्राप्त हुआ। पुरवा में चातुर्मास का योग पहली बार मिला इसलिए लोग उत्साह से चातुर्मास की तैयारियाँ करने लगे। 8 जुलाई को गुरुपूर्णिमा महोत्सव पर गुरुवर के पाद प्रक्षालन एवं पूजन कर मनाया गया। और गुरुवर ने श्री इन्द्रभूति गौतम को महावीर रूप गुरु कैसे मिले इसके बारे में प्रवचन में दिये। पश्चात् 9 जुलाई को दोपहर में चातुर्मास कलश स्थापना का कार्यक्रम किड्स

केम्प स्कूल के ग्राऊण्ड पर बनाये गये विशाल पण्डाल में किया गया। जिसमें पुरवा महिला मण्डल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। पश्चात् अतिथियों द्वारा चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन का कार्यक्रम हुआ। तदुपरान्त दिल्ली, सूरत, अहमदाबाद, तमिलनाडु, दमोह, सागर, ग्वालियर, कोपरगाँव, भोपाल आदि से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। पश्चात् गुरुवर का पादप्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट किये गये। मंच संचालन डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल द्वारा किया गया। कलश स्थापना का कार्यक्रम श्री ब्र. जिनेश भैया द्वारा सम्पन्न करवाया गया जिसमें चातुर्मास के तेरह कलश स्थापित किये गये। पश्चात् गुरुवर की मंगलवाणी से चातुर्मास का विशेष महत्त्व जनता को ज्ञात हुआ। अन्त में मंत्रोच्चारण पूर्वक धर्मशाला में कलश स्थापित किये गये। इस प्रकार यह चातुर्मास कलश स्थापना का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त 29 जुलाई को श्री पार्श्वनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक (मोक्ष सप्तमी) दिवस बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। शिखरजी की रचना बनाकर, तरह-तरह से सजाये गये लाडुओं से भगवान की पूजन एवं निर्वाण का आयोजन सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में श्री पार्श्वनाथ भगवान के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला। शाम को श्री पार्श्वनाथ भगवान पर प्रश्नमंच भी किया गया।

दिनांक 7 अगस्त को रक्षाबंधन पर्व एवं श्रेयांसनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक लाडु चढ़ाकर मनाया गया। षोडसकारण महापर्व का प्रारम्भ कलश स्थापना पूर्वक किया गया। सोलहकारण व्रत करीब 100 लागों ने सम्पन्न किये। एक महीने तक प्रतिदिन अभिषेक, शान्तिधारा, संगीतमय पूजन, आचार्यश्री का प्रवचन आदि कार्यक्रम हुये। 23 अगस्त को चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज का समाधि दिवस मनाया गया। 26 अगस्त से पर्यूषण पर्व में प्रतिदिन दशलक्षण विधान पूर्वक विशेष पूजन एवं एक-एक धर्म पर आचार्यश्री के प्रवचन, दोपहर में मुनिश्री नमितसागरजी द्वारा जैनागम संस्कार की कक्षा एवं श्राविकाओं द्वारा तत्त्वार्थ सूत्र का वाचन और आचार्यश्री द्वारा अर्थ सहित प्रवचन हुये। शाम को प्रतिक्रमण, ध्यान, स्वाध्याय और सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सम्पन्न हुये। चातुर्मास के दौरान सुबह आलाप पद्धति कक्षा पश्चात् सम्यक् ध्यान पर प्रवचन चले, तीर्थोदय काव्य पर (सोलहकारण भावनाओं पर) आचार्यश्री के प्रवचन हुये तथा दोपहर में आचार्यश्री द्वारा मूलाचार व आर्यिका प्रतिभामतिजी के द्वारा छहढाला आदि कक्षायें चलीं। शाम को स्तोत्र, पाठ, कविताओं में धर्म का पाठ सिखाया गया तथा रविवारीय विशेष प्रवचन भी सम्पन्न हुए। 6 सितम्बर को षोडसकारण महामण्डल विधान किया गया। 8 सितम्बर को विमानोत्सव, क्षमावाणी का कलश एवं सामूहिक क्षमावाणी पर आकर्षक प्रवचन सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हो गये। पर्यूषण पर्व में मढ़ियाजी क्षेत्र की कमेटी के पदाधिकारियों द्वारा पर्व के बाद पंचमी तिथि पर होने वाले मेले के उत्सव में पधारने हेतु पुरवा में आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ के लिए श्रीफल चढ़ाकर भक्तिपूर्वक निवेदन किया।

शक्ति अपव्यय से बचो

-आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

जिस प्रकार बातों-बातों में पैसा खर्च नहीं किया जाता है इससे नुकसान होता है, उसी प्रकार बातों-बातों में वचनबल का प्रयोग नहीं किया जाता इससे कर्मबंध होता है।

साभार-दृष्टांत से सिद्धांत की ओर, (मार्च 1997-सिद्धवरकूट)

भाव-विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।
   डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**
प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य
तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचन विला, कृष्ण विहार, वी.के. कोल नगर, (अजमेर राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

जून 2017

प्रथम श्रेणी
श्रीमती मनोरमा सुरेन्द्रकुमार जैन गांधी
51, कस्तूरबा नगर, गली नं.1
रतलाम 457001 (म.प्र.)

द्वितीय श्रेणी
श्रीमती कमला केशरी चँद्र जैन
सरकारी नर्सरी के पीछे, नूतन नगर
खरगोन (म.प्र.)

तृतीय श्रेणी
श्री हरीश चंद्र जैन
60/57, रजतपथ, मानसरोवर
जयपुर-302020

उत्तर पुस्तिका जून 2017

1. वैशाख शुक्ला 1	2. हस्तिनागपुर	3. जातिस्मरण
4. स्वयंभू	5. हाँ	6. ना
7. हाँ	8. हाँ	9. जन्म
10. सहेतुक	11. भाविता	

12. भ.कुन्थुनाथ दुषमा-सुषमा नामक चतुर्थकाल में सम्मेद शिखरजी सिद्धक्षेत्र से और ज्ञानधर टोंक (कूट) से मोक्ष गये।

13. 23,750	14. 16,000	15. 60,000
16. 1,000	17. गलत	18. सही
19. गलत	20. सही	

भाव-विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक : 100

- ❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।
- ❖ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- ❖ उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखें। लिखकर काटे या मिटाए जाने पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

सही उत्तर पर (✓) सही का निशान लगावें-

प्र.1. भ.अरहनाथ कहाँ से अवतरित हुये थे?

आरण स्वर्ग से ( ) अच्युत स्वर्ग से ( ) सर्वार्थसिद्धि से ( )

प्र.2. भ. अरहनाथ के पिता का नाम क्या था?

विश्वसेन ( ) सुरसेन ( ) सुदर्शन ( )

प्र.3. भ. अरहनाथ के कुमारकाल का प्रमाण कितना था?

2,50,000 वर्ष ( ) 21,000 वर्ष ( ) 25,000 वर्ष ( )

प्र.4. भ. अरहनाथ की आयु कितनी थी?

84 हजार वर्ष ( ) 55 हजार वर्ष ( ) 95 हजार वर्ष ( )

हाँ या ना में उत्तर दीजिये-

प्र.5. भ. अरहनाथ की दीक्षा तिथि ज्येष्ठ कृष्णा बारस थी। ( )

प्र.6. भ.अरहनाथ ने दो हजार राजाओं के साथ दीक्षा धारण की थी। ( )

प्र.7. भ. अरहनाथ ने आम्रवृक्ष के नीचे केवलज्ञान पाया। ( )

प्र.8. भ. अरहनाथ ने 42,000 वर्ष तक राजभोग किया। ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

प्र.9. भ.अरहनाथ को वैराग्य .... से हुआ।

(उल्कापात, मेघ पटल नाश, जातिस्मरण)

प्र.10. भ. अरहनाथ के छद्मस्थ अवस्था का काल .... था।

(16 वर्ष, 20 वर्ष, 15 वर्ष)

प्र.11. भ.अरहनाथ के केवलज्ञान की तिथि .... थी।

(चैत्र शुक्ला 3, वैशाख कृष्णा 9, कार्तिक शुक्ला 12)

दो पंक्तियों में उत्तर दें:-

प्र.12. भ.अरहनाथ के समवसरण का विस्तार एवं वहाँ पर स्थित कुल मुनियों की और आर्यिकाओं की संख्या बतलाइए?

....

....

....

सही जोड़ी मिलायें:-

प्र.13. भ. अरहनाथ की दीक्षा पालकी का नाम - रेवती

प्र.14. भ. अरहनाथ के जन्म नक्षत्र का नाम - कुंभार्य

प्र.15. भ. अरहनाथ के प्रथम आहार दाता का नाम - वैजयन्ती

प्र.16. भ. अरहनाथ के समवसरण में प्रमुख गणधर का नाम - अपराजित

सही (✓) या गलत (×) का चिन्ह बनाइये:-

प्र.17. भ.अरहनाथ एक माह आयु शेष रहने पर प्रतिमायोग धारण किया था। ( )

प्र.18. भ. अरहनाथ ने संबल कूट से मोक्ष गये। ( )

प्र.19. भ. अरहनाथ के काल में सुभौम चक्रवर्ती हुआ। ( )

प्र.20. भ. अरहनाथ का शरीर तीस धनुष ऊँचा था। ( )

आधार

1. उत्तर पुराण, 2. जैनागम संस्कार

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान परिवार

∗∗∗∗∗ शिरोमणी संरक्षक ∗∗∗∗∗

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)।

∗∗∗∗ परम संरक्षक ∗∗∗∗

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी।

∗∗∗ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ∗∗∗

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी** : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

∗∗ पुण्यार्जक संरक्षक ∗∗

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली।

∗ सम्मानीय संरक्षक ∗

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, गोवा ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर** : श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन, ● **सूरत** : श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेशभाई शाह।

∗ संरक्षक ∗

● श्री जैन विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● **दिल्ली** : श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद ● श्री जैन कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● **भोपाल**: श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, श्री प्रेमचंद जैन ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया, पांडीचेरी ● श्रीमति विमला मनोहर जैन, सूरत ● **जयपुर** : श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर** : श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● **इंदौर** : श्री सचिन जैन, स्मृति नगर ● **पथरिया (दमोह)** : श्री मुकेशकुमार जैन, जैन साईकल मार्ट।

∗ विशेष सदस्य ∗

● **दमोह** : श्री मनोज जैन दाल मिल, ● **अजमेर** : श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● **सूरत** : श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी ● **भोपाल**: श्री राजकुमार जैन।

∗ नवागत सदस्य ∗

● **जबलपुर** : श्री मुन्नालाल जैन, श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, श्री रविकुमार जैन, डॉ. डी.सी. जैन, श्री आलोक जैन, श्रीमती नीना राकेशकुमार जैन, श्री पवनकुमार जैन (पाटन), श्रीमती विभा संजय जैन, श्री कैलाश चंद सुशीला जैन, श्री कन्छेदीलाल गौरवकुमार जैन, श्री सुमन सपना जैन, श्री मनोज कमलकुमार जैन, सुश्री वंदना जैन, डॉ. जिनेन्द्र जैन ● **इचलकरन्जी** : श्री जैन धनराज नथमल बाकलीवाल।

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से

भाव विज्ञान पत्रिका पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन (स्थायी) सदस्यता रुपये 1,500/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा वर्तमान व्यवहारिक का पता :- ....

....

जिला .... प्रदेश ....

पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर .... मोबाईल ....

ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कृपया यहाँ से निकालें

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

आशीर्वाद एवं प्रेरणा : संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

- विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण
- सत् साहित्य समीक्षा।
- अहिंसात्मक जीवन शैली।
- व्यसन मुक्ति अभियान।
- हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।
- नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।
- रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।
- धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।
- धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।
- प्रतिभा सम्पन्न प्रतियोगियों के लिए सम्मानित करना।

नोट : **"भाव विज्ञान" भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

"भाव विज्ञान" एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।
सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या किसी दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

पूरवा, जबलपुर में धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

पुरवा में भाव विज्ञान पत्रिका का विमोचन करते हुए ब्र.जिनेश, ब्र.राजेश, ब्र.नरेश एवं पवन जैन आदि।

पुरवा, जबलपुर में वर्षायोग के तेरह कलशों की स्थापना हेतु शोभा बढ़ाते हुए भक्तगण।

पुरवा वर्षायोग स्थापना पर सम्मानित होते हुए राजकुमार काला, कोपरगांव।

पुरवा, जबलपुर में सम्मानित होते हुए दमोह से पधारे भक्तगण।

पुरवा वर्षायोग 2017 की स्थापना पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देती हुई पाठशाला की कन्यायें।

पुरवा दशलक्षण पर्व में आ.श्री आर्जवसागरजी महाराज का मंगल प्रवचन सुनते हुए श्राविकाएँ।

पुरवा पर्यूषण पर्व में श्रावक साधना का प्रतिक्रमण आदि करते हुए भक्तगण।

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

भेड़ाघाट, नर्मदा के तट पर ध्यान मुद्रा में आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

मढ़िया जी के नंदीश्वर दीप का दर्शन कर लौटते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ

पुरवा, जबलपुर में सम्मान ग्रहण करते हुए राजेन्द्र जैन एवं महेन्द्र जैन, भोपाल।

पुरवा में किड्सकेम्प स्कूल के मैदान में बने विशाल पाण्डाल में प्रवचन देते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

प्रकाशित पुस्तक कन्नड़ भाषा में आर्जव वाणी का विमोचन करते हुए डॉ. जीवंधर जैन, पचन्ना जैन, विजय जैन आदि।

आ.श्री आर्जवसागरजी महाराज का आशीष लेते हुए किड्सकेम्प वेलफेयर स्कूल की संचालित करने वाली सुश्री वंदना बहिन जी।

पुरवा, जबलपुर में अंकुर जैन, सूरत का सम्मान करते हुए युवा वर्ग।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 0755-4902433, 9425601161